आचार्य विद्यासागर
और
नैनागिर

लेखक :
कन्छेदी लाल जी जैन

प्रकाशक:
निर्ग्रन्थ फाउण्डेशन, भोपाल

प्रसंग

आजादी के अमृत महोत्सव 75वीं वर्षगांठ के पावन प्रसंग पर

- कृति : **आचार्य विद्यासागर और नैनागिर**
- लेखक : **कन्छेदी लाल जी जैन**
- आशीर्वाद एवं प्रकाशन प्रेरणा : **संत शिरोमणि आचार्य श्री के परम प्रभावक शिष्य मुनि श्री 108 संधानसागर जी महाराज**
- संस्करण : **प्रथम, अगस्त 2022**
- आवृत्ति : 1100
- मूल्य : **सदुपयोग**
- पुण्यार्जक परिवार : स्मृति –पुज्य माताजी स्व. श्रीमती छगनी देवी पाटनी
धर्म पत्नी स्व. श्री हुकम चंद जी पाटनी
लाडनू निवासी कलकत्ता (प.बं.) प्रवासी
- प्राप्ति स्थल :
1. कन्छेदी जी लाल जी जैन, बम्होरी
2. श्री प्रशान्त जैन, भोपाल (म.प्र.)
मो. 9617700813
3. 'गुणायतन' शिखर जी, मधुवन
फोन : 06558-232438
- मुद्रक : **विकास आफसेट प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स**
45, सेक्टर-एफ, औद्योगिक क्षेत्र
गोविन्दपुरा, भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2601952, 425005624

संत शिरोमणी आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज की सम्पूर्ण देशना एवं
मुनि श्री 108 दुर्लभसागर जी महाराज, मुनि श्री 108 संधानसागर जी महाराज
की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करने हेतु 108 गुरुवाणी

108 गुरुवाणी | 108_guruvani | 108 Guruvani
108 Guru Vani | 8928570597 | 7000062860

आशीर्वचन

कुण्डलपुर महोत्सव के उपरान्त

आचार्य भगवन के आशीर्वाद से नैनागिर सिद्धक्षेत्र की वंदना का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यही पर 1008 सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन भी किया गया। तभी मेरा ध्यान एक पुरानी पुस्तक आचार्य विद्यासागर जी एवं नैनागिर पर गया। लेखक का नाम कन्छेदी लाल जी बम्होरी वाले, हमने उनसे पूछा इस पुस्तक की कोई पी.डी.एफ. आदि हो तो इसे लोगों को उपलब्ध करा दे। उन्होंने कहा इसकी ओरीजनल डायरी मेरे पास है उसके अलावा न ही फोटोकॉपी और न पी.डी.एफ. न ही फोटोज उपलब्ध है। जैसे-तैसे करके इसको दोबारा कम्पोज कराया और आज यह प्रति आपके हाथ में है। आशा ही नही विश्वास है इस प्रति से हम गुरुवर की स्मृतियों से अपने को लाभान्वित करेंगे । कन्छेदी लाल जी को बहुत-बहुत साधुवाद आशीर्वाद कि ऐसी अमूल्य धरोहर को संजोकर रखा, संकलन किया।

गुरु चरणो में नमोस्तु सहित

- मुनि संधानसागर

आमुख

श्री कन्छेदीलाल जैन प्रबंधक श्री दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र रेशन्दीगिर (नेनागिर) द्वारा आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी महाराज का नेनागिर जी पर वर्ष 1977 से 1987 तक के बीच का पूरा तारीखबाई उल्लेख कर अच्छी जानकारी दी है वो ही मैंने पूरी तरह से देखी जो सही है। इतना बड़ा कार्या किया उसके लिए मैं साधुवाद देता हूँ, 19 वर्ष की उम्र में प्रबंधक का चार्ज 13 जुलाई 1973 से कार्य तक संभाल रहा है।

अध्यक्ष
श्री नंदकिशोर लोहिया, दलपतपुर
श्री दि.जैन सिद्ध क्षेत्र, नेनागिर
जिला छतरपुर (म०प्र०)
दिनांक 7.8.1990

प्रास्तावना

13 जुलाई 1973 को यह बालक 19 वर्ष की उम्र मे ही मैंनेजर पद का भार संभाला। जिसका नाम कन्छेदीलाल जैन है इनके पिता शाह परमानंद जी उन्होनें मेरे द्वारा कहन पर रोज डायरी लिखते थे क्या क्या काम किया पूरे दिन की जानकारी लिखना वर्ष 1977 से 1987 के बीच आचार्य भगवन विद्यासागर जी महाराज के चरण 7 बार पड़े उनकी छत्रछाया में तीन चातुर्मास एवं तीन सीत योग हुये। जो कि जानकारी डायरी में लिखते रहे। सारी जानकारी इस पुस्तक में दरसाई गई है। जो मेरे द्वारा पूरी तरह से देखी गई जो सही है। मैंनेजर पद का भार आज भी संभाल रहा है।

मंत्री

सेठ शिखरचन्द्र जी सराफ बन्डा

श्री दि.जैन सिद्ध क्षेत्र नेनागिर

पो.नेनागिर, जिला छतरपुर (म०प्र०)

दिनांक 11.8.1990

अपनी बात

जीवन छोटी–छोटी घटनाओं से भरा होता है इस घटना के दौरान अक्सर हम कुछ ऐसा कर जाते है जो नही करना था और जो करना था वो नही कर पाते समय गुजर जाने के पश्चात समय पर सही निर्णय न ले पाने की कसक रह जाती है।

पिता के समान स्नेह देने वाले अध्यक्ष एवं मंत्री जी का मे बहुत ही आभारी हूँ जिन्होने मुझे इस योग बनाया तीर्थ के चारों तरफ की समाज द्वारा स्नेह मिला मंत्री जी ने हाथ पकड़कर रोकड़ वही लिखना सिखाया पुण्य योग के गुरुवर विद्यासागर 1977 फरवरी में तीर्थ पर पधारे 5 दिन रूककर द्रोणगिर (सेधपाँ) पंचकल्याण कराने हेतू बिहार हो गया।

महापुण्य योग से 1978 के चातुर्मास का योग मिला भगवंत गुरुवर विद्यासागर महाराज के आशीर्वाद से मे बोलना एवं संचालन करना सीखा गुरुवर के मुख से निकला मुनीम जी काटों मत निचोडो आम निब्बु बनिया मसके से रस देत फिर क्या था सब कार्यक्रम का संचालन करने का साहस आ गया एवं रोजाना डायरी के अनुसार गुरुवर के आगमन बिहार एवं नैनागिर पर हुऐ अतिशयकारी सभी घटनाओं का उल्लेख किया गया है। वर्ष 1990 में नेनागिर एवं विद्यासागर नाम से एक पुस्तिका का प्रकाशन 3000 प्रति का हुआ था। मैं कंछेदीलाल प्रबंधक का कार्यभार 13 जुलाई 1973 से आज तक संभाल रहा हूँ।

संकलनकर्ता
कन्छेदीलाल जैन बम्हेरी
मैंनेजर
श्री दि०जैन सिद्ध क्षेत्र रेशन्दीगिर,
नेनागिर, छतरपुर (म०प्र०)
मो.नं. 9981068049

आचार्य गुरुवर विद्यासागर महामुनीराज के बुन्देलखण्ड प्रवेश

गुरुवर के प्रथम चरण बडेबाबा कुन्डलपुर (कुण्डलगिरी) जिला दमोह, म.प्र. में प्रवेश किया लगातार दो चार्तुमास सम्मपन्न हुए, वर्ष 1976 एवं 1977 आचार्य गुरुवर द्वारा जैन बायबल जैन गीता वीरनिर्मांण संवत् 2502 विक्रम संवत 2033 सोमवार भाद्रपद शुक्ल तृतीया 28.8.1976 जैन गीता ग्रन्थ की पूर्णता हुई।

''समण सुत्तं मंगल सूत्र''
णमों अरि रहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं।
णमों उवज्साषाणं, णमो लोए सव्य साहूणं।।

''जैन गीता, मंगल सूत्र''
हें शान्त सन्त अरहन्त अन्नतज्ञाता,
हे युद्ध बुद्ध शिवसिद्ध अबद्ध घाता।
आचार्य–वर्य उवझाय सु साधु सिन्धु
में बार–बार तुम पाद पेयोज बन्दूँ।।

''जैन गीता जिन शासन सूत्र''
जोभी लिखा सहज से अरहन्त गाया,
सत शास्त्र बाद गण नायक ने बनाया।
पूजूँ इसे मिल गया षुतबोध सिन्धु,
बिन्दु बिन्दु दृग बिन्दु समेत बन्दु।।

श्री 1008 प्राचीन पार्श्वनाथ भगवान मंदिर नं. 42 में विराजमान हैं।

जैसे हिन्दुओ में गीता, बोद्धो मे धम्मपद, ईसाइयों में बाईबल, मुसलमानों मे कुरान बडे ग्रन्थ हैं इसी प्रकार आचार्य श्री द्वारा रचित जैन गीता जैनियों का महाग्रंथ बन गया। कुण्डलपुर के बाद 1977 के वर्षायोग के बाद बुन्देलखण्ड में द्वतिये चरण नेनागिर जी सिद्ध क्षेत्र पर पहुँचे जो अद्वतिये हो गये।

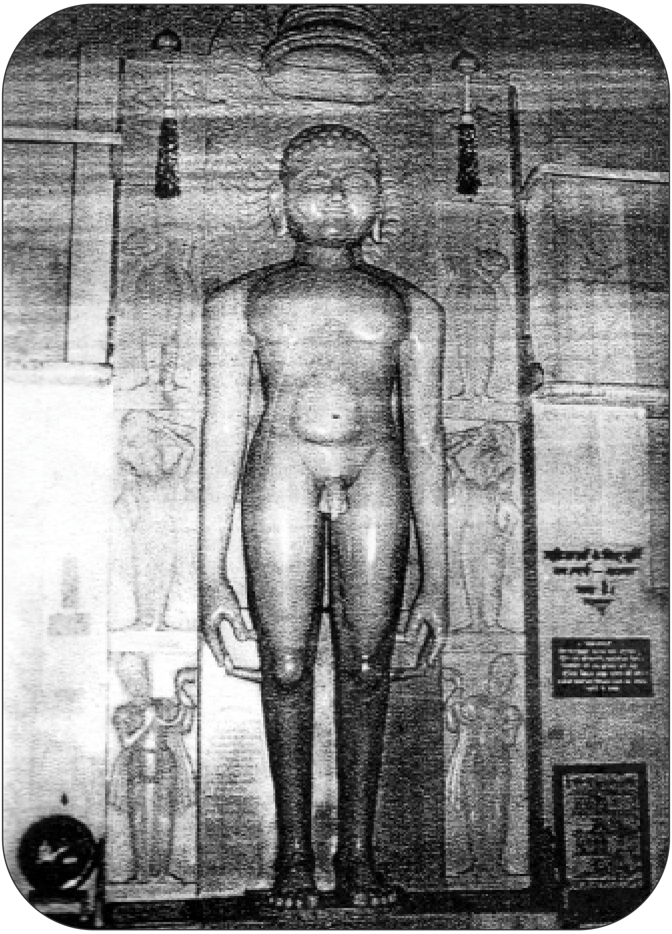

श्री 1008 चिन्तामणी पार्श्वनाथ जी वास्तविक अवगाहना
9 हाथ उतंग

श्री 1008 दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र रेशन्दीगिर नैनागिर जी में श्रमण परम्परा के आदर्श संत जैनाचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज के पावन सानिध्य में तीर्थ दौड़ा पर हुई उपलब्धि।

आचार्य श्री का प्रथम आगमन :–

इस पवित्र भूमि पर 1977 के कुन्डलपुर चार्तुमास के बाद द्रोणगिर सिद्ध क्षेत्र गजरथ पंच कल्याणक में जाते समय दिनांक 11.2.77 को शाम 5 बजे तीर्थ राज पर प्रवेश किया 5 दिन संघ सहित नैनागिर पर रूके संघ में निम्न साधुगण थे–

1. आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी
2. छुल्लक श्री 105 योग सागर जी
3. छुल्लक श्री 105 समय सागर जी
4. छुल्लक श्री 105 नियम सागर जी
5. छुल्लक श्री 105 दर्शन सागर ब्राहत्पचारी सतीसचन्द्र एवं शरद चन्द्र जी

चौका बन्डा दलपतपुर एवं बम्होरी में आये प्रथम अहार आचार्य श्री का नंदकिशोर लोहिया के चौका में, दूसरे दिन अहार आचार्य श्री का सेठ शिखर चन्द्र जी बन्डा के चौका में, तीसरे दिन अहार आचार्य श्री का कन्छेदीलाल मैंनेजर के चौका में, चौथे दिन का अहार आचार्य श्री का सि०सतीस चन्द्र के चौका में नैनागिर जी में प्रवेश बरा (सुरई गाँव) की तरफ से हुआ था, बिहार दिनांक 15.2.77 को सामायक के बाद बम्होरी तरफ बिहार हुआ 16.2.77 का अहार बम्होरी में हुआ। अहार के बाद बिहार शाहगढ़ की ओर हुआ। 17.2.77 को अहार शाहगढ़ में हुआ अहार के बाद बिहार हीरापुर तरफ हुआ 18.2.77 को अहार हीरापुर मे हुये अहार के बाद बिहार द्रोणगिर सेदपा की तरफ हुआ 18.2.77 को द्रोणगिर शाम को प्रवेश हुआ। द्रोणगिर में पंचकल्याणक गजरथ

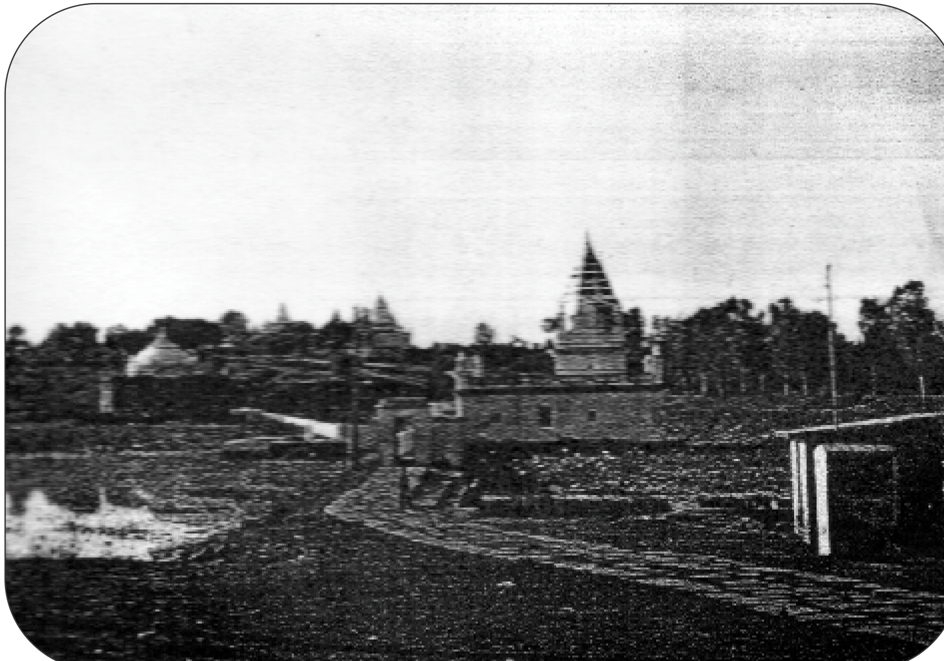

जल मंदिर, समवसरण मंदिर, पहाड़ी के जिन मंदिर

महोत्सव चौबीसी जिनालय का दिनांक 25.2.1977 से 2.3.1977 तक प्रतिष्ठाचार्य पं.गुलाबचन्द्र जी पुण्य टीकमगढ़ सहायक प्रतिष्ठाचार्य पं.बाबूलाल जी आकुल दुर्ग इसी समय मुनि आर्यनन्दी जी महाराज थे।

आचार्य श्री द्वितीय बार आगमनः–

तीर्थराज की पवित्र भूमि पर 28 जून 1978 को दलपतपुर तरफ से नैनागिर पधारे। 16 जुलाई 1978 को चर्तुमास स्थापित किया संघ में निम्न साधुगण थे–

1. आचार्य श्री 108 विद्यासागर महामुनिराज जी
2. ऐलक श्री 105 योग सागर जी
3. ऐलक श्री 105 दर्शन सागर जी
4. छुल्लक श्री 105 समय सागर जी
5. छुल्लक श्री 105 नियम सागर जी

ब्राहम्मचारीगण :–

1. ब्र.नवीन कुमार जी गढ़ाकोटा
2. ब्र. सुशील कुमार जी छतरपुर
3. ब्र. भगवान दास जी लहरी दमोह
4. ब्र. देवेन्द्र कुमार जी बन्डा
5. ब्र. सतीश कुमार जी कंटगी

28 जून 1978 को आचार्य संघ दलपतपुर की ओर से शाम 5 बजे तीर्थ पर पधारे संघ जलमंदिर जी में रुका यह जानकारी बन्डा में विराजमान श्री 105 छुल्लक चंद्रकीर्ति जी महाराज को मालूम हुई, वे ब्राहाम्यचारी बाबूलाल जी (मिव्रमिलन)बालो के साथ हाथ ठेला से नैनागिर 1 जुलाई 1978 को पधारे। 2 जुलाई को आचार्य श्री से संलेखना (समाधी) लेने की प्रार्थना की छुल्लक

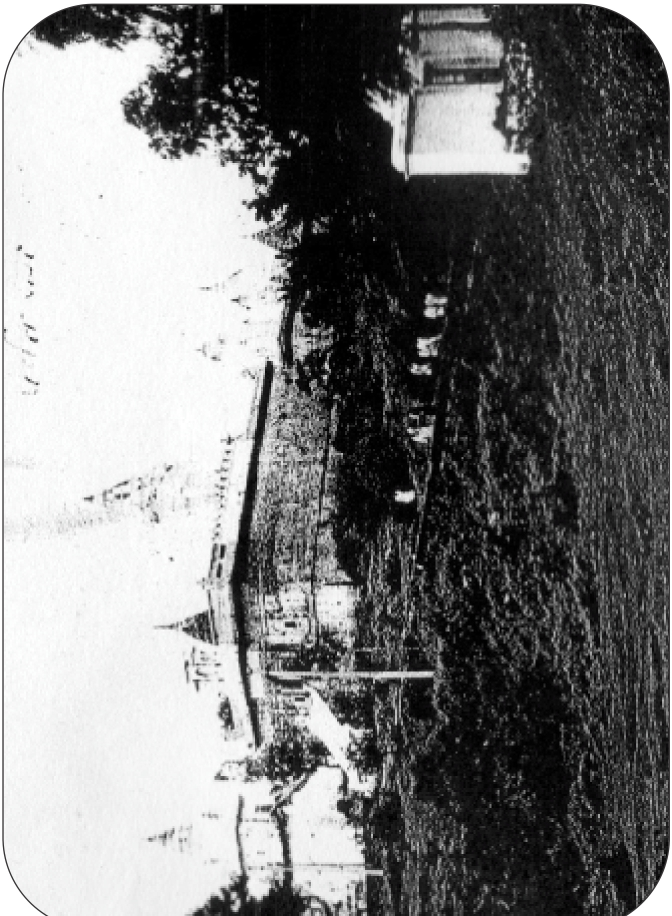

पहाड़ी का गेट जीना रास्ता एवं चौबीसी जिनालय सभी मंदिर

चन्द्रकीर्ति की स्थिति ओर भावना देखकर 4 जुलाई को संल्लेखना व्रत देकर मुनि पद प्रदान किया और नाम दिया मुनि चन्द्रसागर महाराज संसार शरीर से विरक्त मुनि चन्द्रसागर जी महाराज ने 5 जुलाई 1978 बुधवार को शाम 7:45 बजे आचार्य श्री के समक्ष णमोकार मंत्र का उच्चारण करते करते शरीर त्याग दिया रात ही में समाधि का समाचार चारो तरफ फैल गया। प्रात: काल हजारो की संख्या में जैन अजैन एकत्रित हो गये, ग्राम की कीर्तन मंडली के सभी लोग अपनी मंडलियों के गाजे बाजे के साथ गये। 6 जुलाई गुरुवार सुबह 9 बजे समाधिस्थ मुनिराज को शोभा यात्रा प्रारंभ हुई, तालाब के बंधान पर गाजे–बाजे के साथ मुनिराज का पार्थिक शरीर चन्दन नारियल, घी के साथ अग्नि में समर्पित किया गया। श्रृद्धालुओं के आग्रह पर दाह स्थल पर चबूतरा बनाया गया।

आचार्य चरणें में डाकू का समपर्ण:–

लगभग 40–50 वर्षो से बुन्देलखण्ड डाकू ग्रस्तक्षेत्र रहा है, जंगल में होने के कारण नैनागिर डाकूओं की शरण स्थली रहा है। नैनागिर के आप–पास 15–20 मील के घेरे में घन–घोर जंगल होने के कारण डाकूओं के छिपने के लिए बडे सुभीते का स्थान था तो साधु संतो को ध्यान अध्ययन के लिए अत्यंत शांति प्रद एकान्त स्थल हैं। सन् 1978 के वर्षा योग के पूर्व मुनि श्री 108 चन्द्रसागर जी की समाधी हो जाने के बाद क्षेत्र कमेटी एवं आप–पास की समाज को ऐसा लग रहा था कि आचार्य श्री यहा से बिहार न कर जाय यह खबर कुख्यात डाकू हरीसिंह तक पहूँची पूज्य आचार्य श्री के समक्ष उपस्थित होकर बोला ‘हरीसिंह धोती कुर्ता काली जाकट टोपी लाल पिछोरिया पहिन कर आया। उस समय आचार्य श्री सामायक ध्यान में थे। वह सामने बैठ गया आचार्य श्री जब ध्यान से उठे तो हरीसिंह चरणों में झुका तो आचार्य महाराज ने कहा अत्याचार कुछ कम कर दो, हरीसिंह ने कहा में क्या अत्याचार करुंगा मेरा भेष देखले पुन: आचार्य श्री ने मुस्कारात हुए कहा फिर भी कम कर दो। मेरे बारे मे महाराज जी

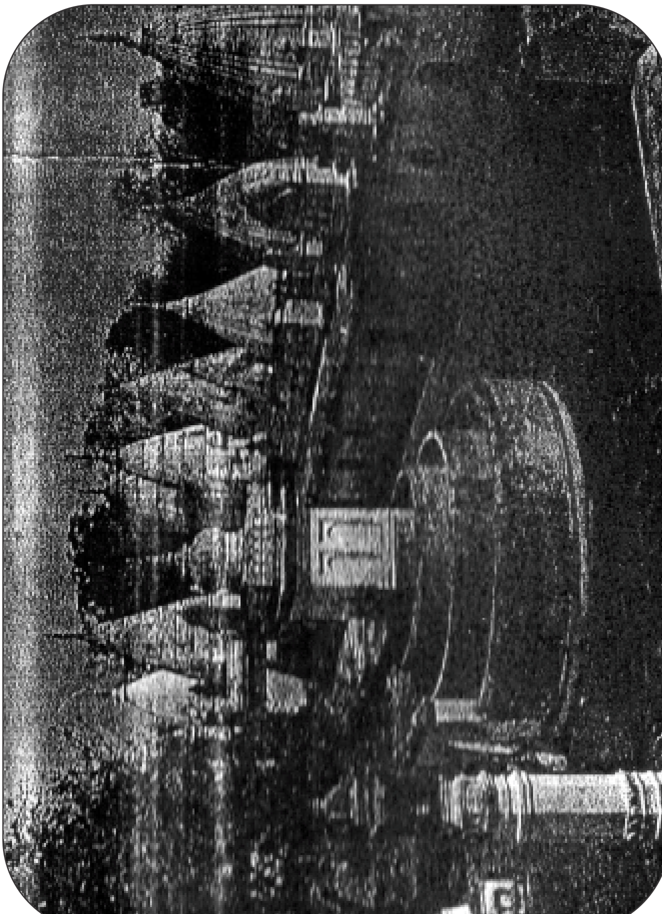

पहाड़ी के सभी मंदिर मेरू माणिस्तम्भ

को कैसे पता चला होगा। आंखों से आसूधारा निकल पड़ी हाथ जोड कर विनती करने लगा बस करें में कही नही जाये यही पर हर रहे अगर आप जाओगे तो हमारे सीना के ऊपर से जाना होगा हम आगे लेट जायेगें। आचार्य महाराज ने मुस्कराते हुए आशीर्वाद दिया तब डाकू हरीसिंह ने कहा हमारी पूरी जिम्मेदारी है किसी की सुई भी गुम नही होगी मे प्रतिज्ञा करता हूँ कि हमरा डाकूदल आपके दर्शन के लिए आने वाले यात्रियों की ओर आँख उठाकर भी नही देखेगा, बल्की सुरक्षा करेगा। चार्तुमास क्षैत्र कमेटी आस–पास की समाज हरीसिंह डाकू सरपंच भारीरथ यादव खिरिया आदिवासी, यादव समाज के विशेष आग्रह करने पर आचार्य श्री द्वारा 16 जुलाई 1978 को चार्तुमास की स्थापना हुई। आचार्य भगवन ने कहा क्षेत्र कमेटी के पदाधिकारीयों की स्वीकृति हो तो में चार्तुमास करूँ। अध्यक्ष नंदकिशोर जी लोहिया दलपतपुर मंत्री सेठ शिखर चन्द्र जी बण्डा तथा में कन्छेदीलाल मैंनेजर ने खडे होकर आचार्य भगवन विद्यासागर जी से निवेदन किया हम सभी यही चाहते है कि आप चौमासा यही पर हो। चार्तुमास की स्थापना के दिन चौबीसी जिनालय में प्रवचन पूर्व मंगलाचरण के रुप में तीर्थ वन्दना की।

आचार्यश्री जी द्वारा

पारस प्रभुका समवशरण इस पुन्य भूमि पर आया था,
तपस्चरण कर ऋषिराजों ने इसे पवित्र बनाया था।
उन वरदत्तादिक ऋषियों के चरणों का करता हूँ अभिनंदन,
रेशन्दीगिर पुण्यधरा का करता हूँ शत् शत् वन्दन।।

19 जुलाई 1978 को 5 बहनों द्वारा आजीवन ब्रह्मचारी व्रत लिये:–

1. सुमन जी बन्डा

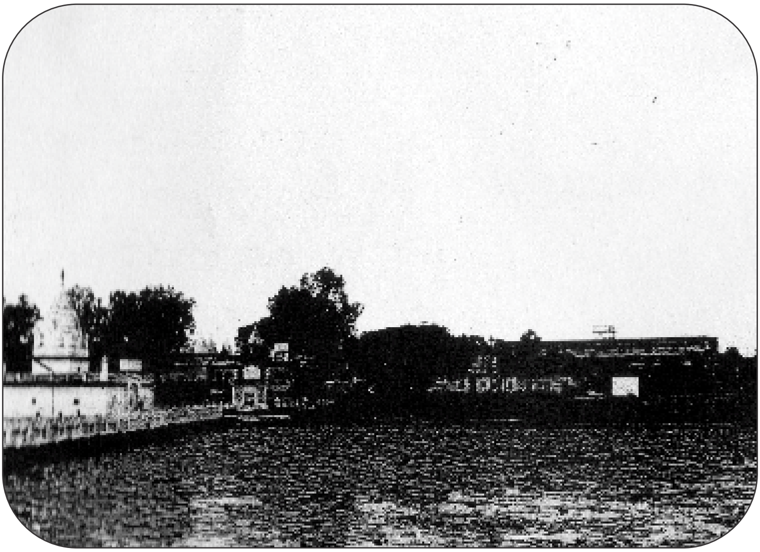

जल मंदिर तलहटी के मंदिर एवं धर्मशाला

आचार्य जी से आशीर्वाद लेते हुए

2. स्नेह जी बन्डा
3. माया जी बन्डा
4. चन्द्रा जी शाहगढ़
5. सुमन जी पटारी बन्डा

पाँचो किशोरी कुमारियों ने आचार्य भगवन से आजीवन ब्रह्मचारी व्रत लेकर नैनागिर पवित्र भूमि को नमन कर आचार्य श्री के आशीर्वाद पाकर आत्म कल्याण हेतु अग्रसर हुई।

अहिंसा का प्रभावः-

परम पूज्य आचार्य भगवन ध्यान एवं सामायिक हेतू कभी कभी जंगल में सिद्धसिला पर जाकर ध्यान लगाते थे दिनांक 3.9.1978 के दिन जब आचार्य श्री ध्यान कर रहे थे तभी ग्राम फेरबना जिला दमोह निवासी श्री खेतसिंह जू राव साहब नैनागिर के जंगल में शिकार खेलते हुए एक हिरण का घात लगाये हुए आ रहे थे। प्राणो से भयभीत हिरण भागता-भागता सिद्धसिला पर आ पहूँचा दिगम्बर मुनिराज की शान्त मुद्रा से अभय पाकर आचार्य श्री के पीछे खड़ा हो गया श्री राव जू बन्दूक लिये हुए शिकार के पीछे आये आचार्य श्री की ध्यान मुद्रा और अंहिसा के प्रभाव से उनका शिकारी मन बदल गया आचार्य श्री के चरणों में नत मस्तक हो स्वप्रेरण से बोले महाराज में आज से कभी भी शिकार नही खेलूंगा। थोड़ी देर बाद जब आचार्य श्री ध्यान से निवृत हो आंखे खोली तो राव साहब ने पुनः चरण स्पर्श कर अपनी प्रतिज्ञा दुहराही मुस्कराहट के साथ आचार्य श्री का आशीर्वाद शिकारी को मिला एवं अभय का वरदान हिरण को प्राप्त हुआ, जीवन पर्यन्त शिकार न खेलने का नियम राव साहब ने लिया।

आचार्य भगवन सिद्धसिला की ओर जाते समय

तपस्या की परीक्षाः-

आचार्य श्री का (स्वास्थ) तबियत अधिक खराब हो गई थी बुखार 103 डिग्री तक काभी समय तक रहा। कटनी के वैद्यराज आये सुरेश जैन आई.ए.एस. भोपाल से डॉक्टर वैद्य को लेकर आये डॉक्टर वैद्य आश्चर्य चकित थे कि इतने तेज बुखार में आचार्य महाराज प्रशन्य मुद्रा में है चलने एवं खड़े होने की सामर्थ न होने के कारण पहाड़ी पर ही मुनि सुव्रतनाथ जिनालय के बाजू में ही अहार चरिया की व्यवस्था की गई, आचार्य श्री का स्वास्थ्य कुछ ठीक होने लगा पूर्ण ठीक होने के बाद आचार्य श्री अहारों को नीचे आने लगे। आज भी उस स्थान पर पहाड़ी पर जहा से आचार्य श्री का स्वास्थ्य ठीक हुआ था उस स्थान के ईसान कोण पर केन्द्र बिन्दु बनाया गया है जो भी अपनी भावना उस स्थान पर बैठ कर ध्यान पूर्वक करता है उसको पूर्ण सफलता मिलती है ऐसा अतिशय आज भी है।

प्रवचन श्रोता नाग-नागिनः-

आचार्य भगवन्त श्री विद्यासागर जी महामुनिराज का भव्य जीवो को आत्म कल्याण की प्रेरणा देने वाला मंगल प्रवचन प्रत्येक गुरुवार व रविवार को चौबीसी जिनालय पार्श्वनाथ मंदिर जी में होता था। प्रवचन के समय पर दूर-दूर के ओर समीपी ग्रामों से अपारजन समूह आता रहता था।

लेकिन श्रावक श्राविका की उपस्थिति के साथ आचार्य श्री प्रवचन हेतु सिद्यासन पर विराजते ही कभी-कभी नाग-नागिन आते प्रवचन श्रवण करते प्रवचन समाप्ति पर भूमि पर अपना मस्तक रखकर आचार्य श्री को प्रणाम कर चले जाते। जनता आश्चर्य से नाग-नागिन के जोड़े को देखती रहती न कभी किसी ने उन्हें छेड़ा ना कभी उन्होंने किसी को सताया (स्थान चौबीसी जिनालय पर्वत पर) श्री सिद्ध क्षेत्र नैनागिर के पर्वत मंदिरों की शिखरो पर उसी या अन्य सर्पो को शिखर पर चढ़ते उतरते हजारो लोगो ने देखा पर कभी किसी दर्शनार्थो को भयभीत होते नही पाया गया यह है आचार्य श्री का प्रभाव।

सिद्ध सिला पर विराजमान मुनिश्री नियमसागर जी एवं कन्छेदीलाल बम्होरी

आचार्य श्री द्वारा जीव, अजीव, आश्रव, बंध, सम्बर, निर्जारा मोक्ष तत्व पर प्रवचन हुए जो प्रवचन प्रदीप में संकलित है।

आचार्य श्री द्वारा छुल्लक से ऐलक दीक्षा :-

दिनांक 2.10.1978 को 105 छुल्लक की समयसागर जी एवं छुल्लक नियम सागर जी को ऐलक दीक्षा प्रदान की नाम यही रहे एवं सतीश कुमार जी बन्डा, जयकुमार जी ईवरवारा, महेन्द्र कुमार जी नेमखेडा वालों को आचार्य श्री द्वारा आजीवन ब्रह्माचारीव्रत लिये।

आचार्य श्री द्वारा दो छुल्लक दीक्षा :-

दिनांक 2 नवम्बर 1978 को विशाल समुदाय के बीच प्रवचन हाल में दोपहर 2 बजे ब्रह्मचारी सतीश कुमार जी कंटगी एवं ब्रह्मचारी सुनील कुमार गोंदिया छतरपुर वालों को छुल्लक दीक्षा प्रदान की गई। ब्रह्मचारी सतीश कुमार कंटगी नाम दिया, 105 छुल्लक श्री संयम सागर जी ब्रह्मचारी सुशील कुमार छतरपुर नाम दिया, 105 छुल्लक श्री शीलसागर जी नाम आचार्य श्री द्वारा प्राप्त हुये।

आचार्य श्री द्वारा संघस्थ साधुजनो को अध्यापित कराय ग्रन्थ :-

संघस्थ साधुओ ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारणी बहनों, भाईयों को सर्बार्थ सिद्धी का वाचन कराया गया।

आचार्य श्री द्वारा रचित ग्रंथः-

आचार्य गुरुवर द्वारा अष्टपाहुड़ ग्रन्थ का लेखन किया गया अष्टपाहुड़ जैन श्रमण परम्परा में दिगम्बर जैनालायों में अग्रगव्य आचार्य कुन्द-कुन्द द्वारा 84 पाहुड़ो का सृजन का उल्लेख प्राप्त होता है, उन्ही मे से दर्शन पाहुड़ 36, सूत्र पाहुड़ 27, चारित्र पाहुड़ 45, बोघ पाहुड़ 62, भाव पाहुड़ 165, मोक्ष पाहुड़ 45, लिंग

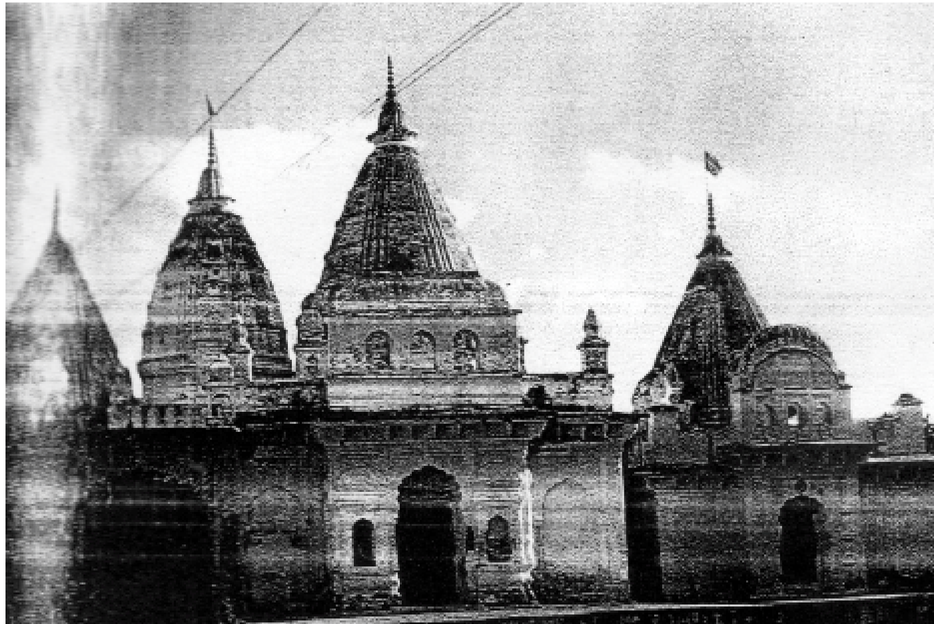

श्री मुनि सुव्रिरतनाथ जिनालय इसी स्थान पर आचार्यश्री के आहार हेतू चौका लगाया गया था,
स्वास्थ खराब होने के कारण स्वास्थ ठीक हो गया था। इस स्थान पर आज भी ध्वज लगाने पर शान्ति मिलती है

पाहुड़ 22, शील पाहुड़ 40 कुल मिला कर अष्टपाहुड़ की ये 503 शौरसेनी प्राकृत भाषागत गाथाएँ श्रमण, आर्यिका, श्रावक तथा श्रीविकाओ की संहिता के रूप में समाद्रत है।

दर्शन से सामान्य तथा अर्थ सम्यक दर्शन लिया जाता है, किन्तु कुन्द–कुन्द भगवान की दृष्टी में दर्शन का अर्थ सम्यक दर्शन नही, अपितु इस अंग में जिनलिंग, जिनमुद्रा है इस प्रसंग में,

सदधर्म को सहज सम्मुख शीघ्रलाता
सम्यक्तत्व मोक्ष पथ संयम को दिखाता
निर्ग्रन्थ ज्ञानमय दर्शन भी वही है
यों जैन शास्त्र हम को कहता यही है ''14''

प्रत्येक पाहुड़ के पद्यानुवाद के अंत में 2–2 दोहों के द्वारा पाहुड़ की समर्पित हुई है, जब कि बोध पाहुड़ में 3 दोहे लिखे है ये दोहे सहसा हमारी दृष्टि अपनी ओर आकृष्ट करती है।

जिनालयओ आयतन, प्रतिमा 'दर्शन सार'
जैन बिम्बओ जैन की, मुद्रा सुख आगार ॥1॥
ज्ञान देव कुचि तीर्थ भी, दीक्षा पथ अरहन्त,
ग्यारहये मुनि रूप है, करते भव का अन्त ॥2॥
पाषाणदिक में इन्हें, थाप भजो व्यवहार,
यही बोध प्राभूत रहा, अबोध मेटनहार ॥3॥

एक दोहे में पद्यानुवाद में हुई त्रृटियो के लिए क्षमा आचना करते हुए 8 दोहो में गुरु स्मरण एवं मंगल कामना की है। अंत में 2 दोहो में पद्यानुवाद रचना स्थली एवं समय परिचय दिया है, कुल 503 बंसततिलका में पद्यानुवाद तथा मंगला चरण देव शास्त्र गुरु स्तवन आचार्य कुन्द–कुन्द एवं आचार्य ज्ञान सागर जी को नमन करते हुए 5 दोहे है, इस प्रकार 33 दोहो सहित कुल 536 पद्यो मे इस

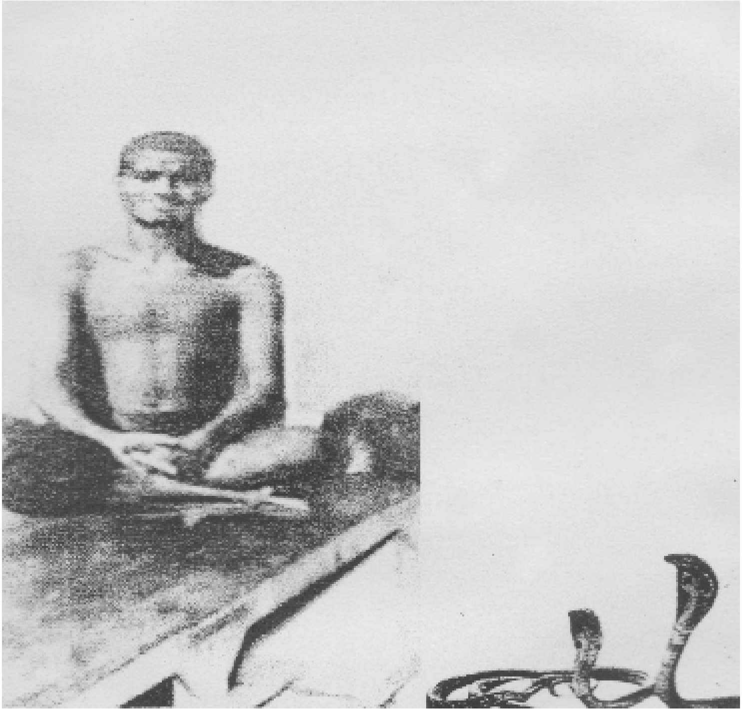

प्रवचन समय नाग-नागिन का आना

कृति का समापन हुआ देव तथा ऋषिगणो के मन को विश्राम देने वाले नयनों को मनोरम लगने वाले क्षेत्र श्री दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र नैनागिर (रोशन्दीगिर) छतरपुर म०प्र० के वर्षाकाल में वर्ण काला, नीला, पीला, सफेद और लाल वर्ण 5 गगन–आकाश, 0 गति–5 गंद्य 2, 5052 यानी अंको को उल्टी गति के अनुसार वीर निर्णय संवत 2505 विक्रम संवत 2035 सन् 1978 की दीप मालिका, दीपावली दिवस कार्तिक कृष्ण अमावस्या दिन मंगलवार दिनांक 31.10.1978 के दिन इसका समापन हुआ।

आचार्य श्री की पिछिका प्राप्त करने का सौभाग्य डॉक्टर पंडित बाबूलाल जी अनुज बन्डा वालों को प्राप्त हुआ इसी दिन मैंने आचार्य श्री से अष्टमी, चतुरदशी एवं सभी परवो की तिथी में ब्रह्मचारी से रहने का नियम लिया। कन्छेदीलाल मैंनेजर नैनागिर जी दिनांक 6 नवम्बर 1978 कार्तिक शुक्ल 7 संवत् 2035 को नैनागिर से बम्होरी की ओर बिहार किया दोपहर 2 बजे बिहार किया बिहार समय

निम्य साधुगण थे–

1. आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी महाराज, 2. ऐलक योगसागर, 3. ऐलक दर्शनसागर जी, 4. ऐलक समयसागर जी, 5. ऐलक नियमसागर जी, 6. छुल्लक संयमसागर जी, 7. छुल्लक शीलसागर जी।

(1) ब्रह्म्यचारी आदअप्पा जी, (2) ब्र.देवेन्द्र कुमार जी, (3) ब्र. सुमत कुमार जी, (4) ब्र.बाबूलाल(मित्रमिलन) (5) ब्र. नवीन कुमार जी, (6) ब्र.भगवान दास जी लहरी थे।

नैनागिर से बम्होरी, बकस्वाहा आंजनी बेरखेडी, बरोदा, हटा, पटेरा कुण्डलपुर में सीतयोग स्थापना के बाद डहा बरोदा, रजपुरा बाजना, द्रोणागिर होते हुए मंदनगंज किशनगढ़ गजरथ पंचकल्याणक के हेतु पहुचे, जो 27 मई से

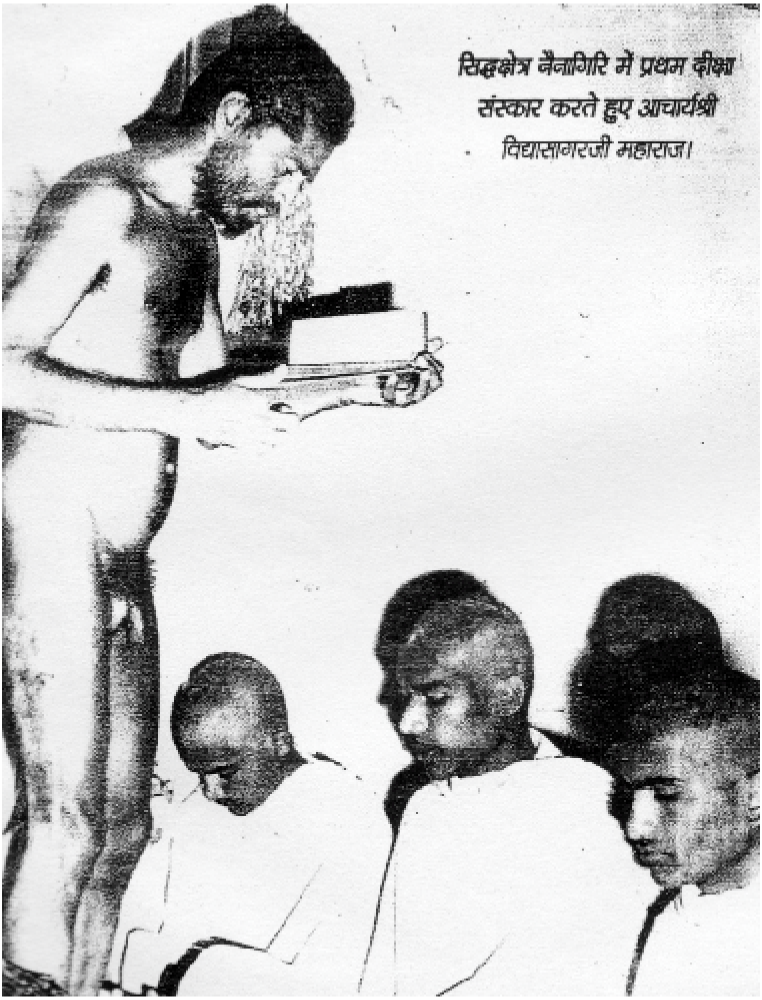

आचार्य भगवन हाटा एवं ऐलक पाँच छुल्लक दीक्षा के संस्कार
करते हुए दिनांक 10 जनवरी 1980

31 मई 1979 का सम्पन्न कराकर वापिस कोटा होते हुए थोवन जी पर चार्तुमास किया 1979 का।

आचार्य श्री का तीसरी बार आगमन :-

आचार्य भगवन थोवन जी के चार्तुमास के बाद बरायठा, खेटोरा होते हुए नैनागिर जी 13.11.79 को शाम 5 बजे आगमन हुआ आचार्य संघ 2 माह 16 दिन नैनागिर जी में विराजमान रहे।

आचार्य श्री द्वारा संघस्थ साधुजनो को अध्यापित कराये ग्रंथ :-

संघस्थ साधुओ ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारणी वहनो, भाईयों को द्रव्य संग्रह, चौबीसठाण, जैन सिद्धांत प्रवेशिका का अध्ययन कराया गया।

आचार्य श्री द्वारा ऐलक एवं छुल्लक दीक्षा:-

मिती माघ वदी 8 संवत् 2036 दिन गुरुवार दिनांक 10 जनवरी 1980 को नीचे मंदिर प्रवचन हॉल से 1 ऐलक दीक्षा 5 छुल्लक दीक्षा प्रादान की गई दोपहर 2 बजे से

1. ब्राह्मचारी नवीन कुमार जी गढ़कोटा	1. ऐलक गुप्ति सागर जी
2. ब्र. महेन्द्र कुमार जी नीमखेड़ा जबलपुर	2. छुल्लक भाव सागर जी
3. ब्र. आदप्या कर्नाटक	3. छुल्लक सुबोध सागर जी
4. ब्र. जयकुमार जी ईश्वरवारा	4. छुल्लक परम सागर जी
5. ब्र. देवेन्द्र कुमार जी बन्डा	5. छुल्लक सुगुप्ति सागर जी
6. वीरेन्द्र कुमार जी सागर	6. छुल्लक छमा सागर जी

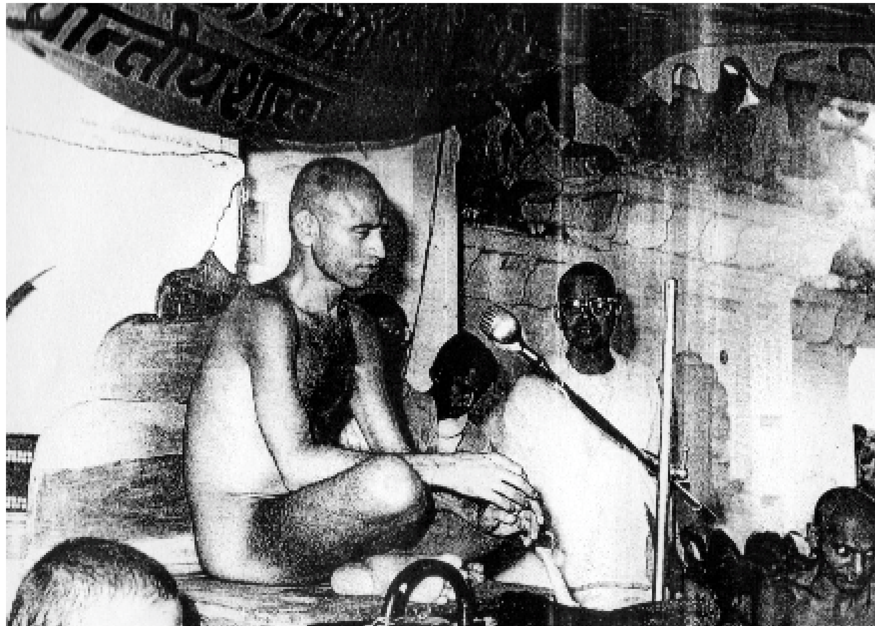

1 नबम्बर 1981 को आचार्य भगवन प्रवचन करते हुए पहाड़ी प्रागढ़में समोसरण मंदिर सिलानियास के समय पं.गुलाबचन्द्र जी पुष्प के बीच में कन्छेदीलाल

बैराग की विचित्रता का प्रभाव :-

उपरोक्त दीक्षाओ को देखने सागर के मुनिभक्त श्री सिंघई जीवनलाल के पुत्र श्री वीरेन्द्र कुमार जी, जो सागर विश्वविद्यालय में एम.टेक के छात्र थे। दीक्षा समय की बैराग्य भावना उनके हृदय में ऐसी गहरी बैठी की आचार्य चरण में पहूँचकर छुल्लक दीक्षा की मांग प्रस्तुत कर दी आचार्य श्री ने कहा कि दीक्षा के लिए दो नियम है प्रथम माता-पिता की आज्ञा द्वितीय कैशलौंच। युवा वीरेन्द्र बोले माता-पिताा गृहस्थ मार्ग में फंसाना चाहते है इसलिए उनकी आज्ञा तो नही मिल सकती, कैशलौंच अभी किये लेता हूँ और आचार्य श्री की आज्ञा मिलते ही घास-फूस की तरह कैश उखाड़कर रख दिये तत्काल छुल्लक दीक्षा मिली नाम मिला छुल्लक छमासागर। दिनांक 1 फरवरी 1980 फागुन वदी 1 संवत् 2036 दोपहर 2 बजे दलपतपुर तरफ बिहार हुआ।

बिहार के समय निग्य साधुगण थे:-

1. आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी, 2. ऐलक योगसागर जी, 3. ऐलक समयसागर जी, 4. नियमसागर जी, 5. ऐलक गुप्तिसागर जी, 6. छुल्लक संयम सागर जी, 7. छुल्लक शीलसागर जी, 8. छुल्लक भावसागर जी, 9. छुल्लक सुबोधिसागर जी, 10. छुल्लक परमसागर जी, 11. छुल्लक सुगुप्तिसागर जी, 12. छुल्लक छमासागर जी।

दलपतपुर होकर द्रोणगिर पहुँचे ग्रीष्मयोग हेतु ऐलक श्री समयसागर जी महाराज की मुनिदीक्षा द्रोणगिर पर्वत पर दिनांक 8.3.80 को सुबह 9 बजे से प्रारम्भ हुईं।

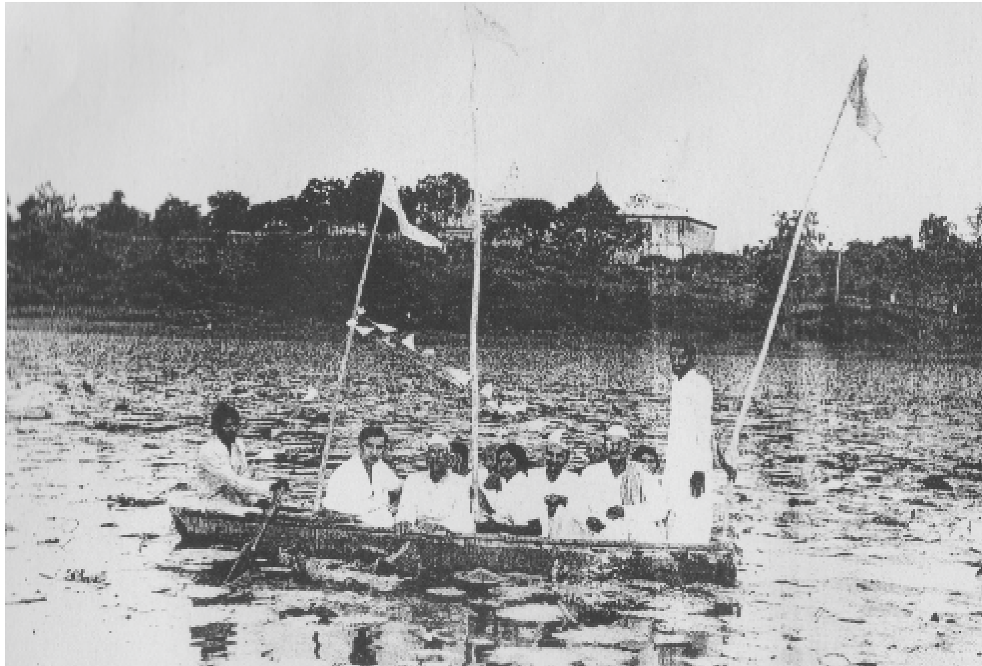

1 नवम्बर 81 समोसरण मंदिर सिलान्यास नाव द्वारा श्री निर्मल कुमार सेठी, पं.पन्नालाल सहित्याचारी, नंदकिशोर लोहिया, सेठ शिखर चन्द्र जी बन्डा में स्वयं बैठा हूँ

आचार्य श्री का चौथीबार आगमन :-

आचार्य श्री मडिया जी जबलपुर ग्रीष्मकाल बाचना समापन करके दमोह बरा होते हुए नैनागिर 5.7.1981 को शाम 5 बजे नैनागिर जी पर प्रवेश हुआ पूरा संघ जल मंदिर जी में रुका, चार्तुमास स्थापित अषाड सुदी 14 संवत् 2038 दिन गुरुवार दिनांक 16.7.81 को हुआ।

संघ में निम्न साधुगण थे :–

1. आचार्य श्री विद्यासागर जी, 2. मुनी श्री समयसागर जी, 3. मुनी श्री योगसागर जी, 4. मुनी श्री नियमसागर जी, 5. ऐलक श्री गुप्तिसागर जी, 6. ऐलक श्री संयमसागर जी, 7. छुल्लक श्री भावसागर जी, 8. छुल्लक श्री सुबोधसागर जी, 9. छुल्लक परम्सागर जी, 10. छुल्लक सुगुप्तिसागर जी, 11. छुल्लक क्षमासागर जी।

समवशरण वर्षायोग की कथा :-

यह वर्षा योग ऐसा प्रतीत हुआ की समवशरण ही आया हो, आज से लगभग 2800 वर्ष पूर्व 23वें तीर्थकर भगवान पारसनाथ स्वामी का मंगलबिहार समग्र भारतवर्ष में हुआ होगा किन्तु प्रमाण रूप से निर्वाण काण्ड में केवल रेशन्दीगिर नैनागिर ने ही स्थान प्राप्त किया यहाँ पर निर्मित सभी जिनालयों में अधिक से अधिक संख्या में पार्श्वनाथ स्वामी की मूर्ति स्थापित है लेकिन क्षेत्र पर समवशरण आगमन का प्रतीक समवशरण मंदिर नहीं हैं। यह कमी आस–पास की समाज को खटकती रहती थी। संयोग मिला आचार्य श्री का समवशरण हेतु वर्षायोग हुआ।

आस पास की समाज एवं क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं को प्रेरणा मिली तीर्थराज पर समवशरण मंदिर निर्मित होना चाहिए कमेटी ने आचार्य श्री से निवेदन किया आचार्य श्री द्वारा मंगल आशीर्वाद प्राप्त हुआ पद्माधिकारियों ने तत्कालीन ट्रस्ट एवं प्रबंध समिति की मीटिंग बुलाई समवशरण मंदिर योजना पारित की गई।

समोसरण मंदिर सिलान्यस 1 नवम्बर 1981 के दिन की भीड आचार्य भगवन के प्रवचन समय पर

समवशरण मंदिर जी का शिलान्यास :-

समवशरण मंदिर शिलान्यास की तारीख निश्चित करने हेतु क्षेत्र समिति की एक बैठक हुई, जिसमें 1 नवम्बर 1981 के शुभ मुहूर्त में शिलान्यास करना तय हुआ। क्षेत्र समिति गिरिराज पर विराजमान आचार्य श्री के चरणों में उपस्थित हुई श्रीफल भेंट कर पार्श्वनाथ समवशरण मंदिर शिलान्यास हेतु निवेदन कर आशीर्वाद मांगा भव्य जीवों का आत्म–कल्याण के लिए एक नवीन साधन की उपयोगिता को दृष्टिगत रख पूज्य आचार्य श्री ने आशीर्वाद प्रदान किया। यह भी एक सुखद संयोग बना कि अखिल भारत वार्षिय दिगम्बर जैन सभा के युवा एवं सक्रिय अध्यक्ष दानवीर श्री निर्मल कुमार जी सेठी, लखनऊ पूज्य आचार्य श्री के दर्शनार्थ नैनागिर पधारे, संयोग का लाभ उठाकर क्षेत्र समिति ने पूज्य आचार्य श्री एवं संघ की पूर्ण उपस्थिति में विशाल समुदाय के मध्य गिरीराज पर पहले आचार्य भगवन का प्रवचन हुए। प्रवचन समय पर पहाड़ी पर जनमानस अपार भीड़ उमड़ी जो पर्वत पर नही बनपाई मंदिर की छतो पर एवं शिखरों पर भी रही।

इस अवसर पर मेरे द्वारा समवशरण की अपील की गई गंद्यकुटी में नारंगी रंग के पार्षण की फर्ण सहित 5 फुट पद्यमासनचार मुर्ति प्रत्येक की राशी 25 हजार रुपया निर्धारित की गई। चारों दातारों के नाम आ गये, चारों दिशाओं के चार मानस्थम्भ प्रत्येक की राशि 11 हजार रुपया निर्धारित की गई, चारों दातारो के नाम आ गये, चारों दिशाओं से विमान से पुष्प वर्ष करते देव प्रत्येक की राशि 7 हजार चारो नाम आगये। समवशरण मंदिर का निर्माण 100×100 फुट के चवुतरे पर 70×70 फुट के घेरे में मंदिर बनना था एवं 40×40 फुट की गंध कुटी प्रस्तावत की गई थी। इसको 5 हजार, 3 हजार, 2 हजार एवं 1 हजार तथा 500 रुपया वाले भी दातार बनाये गये। दातारो ने दान की वर्षा कर दी यह था पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज का प्रभाव सिद्ध भूमि का अतिशय।

इसके बाद शिलान्यास कार्यक्रम रखा गया जलमंदिर से नाव द्वारा समवशरण स्थल तक पहूँचे नाव में श्री पन्नालाल साहित्याचारी सागर क्षेत्र के अध्यक्ष नंदकिशोर जी लोहिया दलपतपुर, मंत्री श्री शिखरचन्द्र जी सेठ बन्डा एवं में स्वयं भी था। श्री युत सेठी जी के कर कमलों से विधि–विधान पूर्वक भगवान पारसनाथ समशरण मंदिर निर्माण का ध्वजा रोहण कराया, इस उपलक्ष्य में सेठी जी द्वारा मंदिर निर्माण हेतु 25 हजार की घोषणा की।

आचार्य श्री द्वारा दो मुनि दीक्षा :–

दिनांक 29.10.1981 को प्रवचन हॉल नीचे मंदिर में 2 मुनी दीक्षा प्रदान की गई।

1. मुनि श्री चेतनसागर जी 2. मुनि श्री ओमसागर जी

इसी अवसर पर ब्राही विद्या आश्रम की पाँच बाल ब्रह्मचारिणी बहिनों ने आचार्य जी से आठमीं प्रतिमा के व्रत लिए।

1. ब्रह्मचारणी सुमन दीदी बन्डा, 2. ब्रह्मचारणी कुसुम दीदी रहली,
3. ब्रह्मचारणी विमलेश दीदी दर्शनी, 4. ब्रह्मचारणी सविता दीदी पिपरई,
5. ब्रह्मचारणी स्नेहलता दीदी बन्डा।

पिछिका पाने का सौभाग्य :–

चर्तुमास समापन के बाद आचार्य भगवन् विद्यासागर जी महाराज की पिछिका पाने का स्वर्ण अवसर श्रीमान नेता कुन्दनलाल जी चौधरी बन्डा वालों को प्राप्त हुआ।

इस चर्तुमास में संघस्थ साधुओं अध्यापित कराये ग्रंथ :–

आचार्य श्री द्वारा संघ के सभी साधु एवं ब्राह्चारी ब्रह्चारणी भैया बहिनों को कातंत्र रुपमाला समयसार का वाचन कराया।

श्री ब्रा.राजाराम बर्णी पडवार निवासी सागर आचार्यश्री द्वारा प्राप्त नाम मुनि समाधी सागर जी

आचार्य संघ का बिहार :–

18 नवम्बर 1981 को दोपहर 2 बजे आचार्य संघ का बिहार दलपतपुर तरफ हुआ दलपतपुर बन्डा सागर होते बीना बारह शीतयोग की वाचना हेतु पहुँचे। बिहार समय निम्न साधुगण थे :–

1. आचार्य श्री विद्यासागर जी, 2. मुनिश्री समयसागर जी, 3. मुनीश्री योगसागर जी, 4. मुनीश्री नियमसागर जी, 5. मुनीश्री चेतनसागर जी, 6. मुनीश्री ओमसागर जी, 7. ऐलकश्री गुप्तिसागर जी, 8. ऐलकश्री संयमसागर जी, 9. छुल्लक भावसागर जी, 10. छुल्लक सुबोधसागर जी, 11. छुल्लक परमसागर जी, 12. छुल्लक सुगुप्तिसागर जी, 13. छुल्लक क्षमासागर जी।

आचार्य भगवन् विद्यासागर जी ससंघ का पाँचवी बार आगमन:–

कुण्डलपुर कोनी जी के पंचकल्याणक 21 से 25 फरवरी 1982 का सम्पन्य कराकर सागर द्वितीयवाचनों हेतु पधारे। ग्रीष्मकालीन षट्खण्डागम धवला ग्रंथ 8 एवं 14 की बाचना चलती रही, बाचना समापन के बाद बन्डा दलपतपुर होते हुए दिनांक 4–6–82 दिन शुक्रवार शाम 5 बजे सासंघ आचार्य भगवन का आगमन हुआ आषाड़ सुदी 14 संवत् 2039 दिन सोमवार दिनांक 5.7.1982 को चर्तुमास स्थापना किया।

संघ में निम्न साधुगण थे –

1. आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी, 2. मुनिश्री समयसागर जी, 3. मुनिश्री योगसागर जी, 4. मुनिश्री नियमसागर जी, 5. मुनिश्री ओमसागर जी, 6. मुनिश्री चेतनसागर जी, 7. ऐलक श्री गुप्तिसागर जी, 8. ऐलक संयमसागर जी, 9. छुल्लक भावसागर जी, 10. छुल्लक सुबोधसागर जी, 11. छुल्लक परमसागर जी, 12. छुल्लक क्षमासागर जी।

समाधी वर्षायोग 1982:–

इस चर्तुमास के शुरू से अंततक समाधी चलती रही ऐसा प्रतीत हुआ की यह चर्तुमास भव्य जीवों के उथ्थान के लिए ही समाधी वर्षायोग के लिए ही हुआ हो।

1. श्री ब्रा. राजाराम जी वर्णो पड़वार निवासी उम्र 84 वर्ष दिनांक 22.6.82 को नैनागिर जी पधारे आचार्य भगवन् से संलेखना समाधी हेतु बार–बार रोजाना निवेदन करते थे दिनांक 27.6.82 को आचार्य श्री द्वारा संलेखना की अनुमति मिली 10 वी प्रतिमा के वृत लिए क्षेत्र निवास किया जीवन पर्यन्त नैनागिर क्षेत्र से बाहर नहीं जायगें, अन्य का त्याग किया आचार्य श्री द्वारा समाधी सागर नाम रखा गया। 27 जून से 11 अगस्त तक छाछ एवं जल मात्र लेते रहे, 11 अगस्त को आपने आचार्य श्री से मुनिव्रत की माँग की आचार्य श्री कहा मुनिव्रत आप कैसे ले सकते हो, मुनिव्रत लेने के ही साथ खड़े होकर करपात्र में अहार लेना पड़ेगा, आप खड़े नही हो पायेगें। समाधीसागर जी का साहस गुरुवर मुझे मुनि दीक्षा देने की कृपा करें मे आज से आपकी साक्षी में छाछ एवं जल का त्याग करता हूँ, आचार्य श्री द्वारा मुनि दीक्षा दी गई, 4 दिन तक सभी प्रकार के अहारों का त्याग रहा। 14 अगस्त को आचार्य श्री पहले ही ज्ञात हो गया था इसलिए अहारों के शीघ्र आकर पहाड़ी पर समाधी सागर जी के पास पहुँचे, उस समय ब्रा.बाबूलाल (मित्रमिलन) ब्रा.प्रवीण कुमार जी (समतासागर) ब्रा.सतीश कुमार जी बन्डा (ऐलक दयासागर जी) के समक्ष आचार्य श्री सम्बोध रहे है। णमोकार मंत्र का स्तवन चल रहा समाधीसागर भी मंत्र का उच्चारण करते–करते समाधिस्त हो गये, सुबह 10:55 पर दिन बुधवार भाद्रपद शुल्क 10 वि.सं. 2039, 14 अगस्त 1982 को समाधी मरण हुआ बडे जन समुदाह के साथ विमान में विराजमान कर गाजे–बाजे के साथ जुलूस मलैया धर्मशाला (सोध संस्थान) के पास तक आया, वापिस गिरीराज के पास पुराने मंदिर के पीछे 3–15 पर अंतिम संस्कार घी, कपूर, चन्दन, नारियल से किया गया।

मुनीश्री समाधीसागर की अंतिम यात्रा का जूलूस

आचार्य श्री द्वारा तीन मुनि दीक्षाः–

आचार्य भगवन् द्वारा दीक्षा विधिविधान से दिनांक 20.8.82 दिन शुक्रवार भादों सुदी 1 वि.सं. 2039 समय दोपहर 2 बजे के प्रवचन हाल (नीचे मंदिर) विशाल जन समुदाय के बीच मुनि दीक्षा हुई आचार्य भगवन् विद्यासागर जी द्वारा–

1. श्री 105 ऐलक क्षमासागर जी,

आचार्य श्री द्वारा प्राप्तनाम श्री 108 मुनि क्षमासागर जी महाराज।

2. श्री 105 ऐलक गुप्तिसागर जी

आचार्य श्री द्वारा प्राप्त नाम श्री 108 मुनि गुप्तिसागर जी

3. श्री 105 ऐलक संयमसागर जी

आचार्य श्री द्वारा प्राप्त नाम श्री 108 मुनि संयमसागर जी

2. दूसरी समाधीः–

श्रीमान ब्रा.चिरोंजीलाल जी विदिशा उम्र 73 वर्ष क्षेत्रराज पर आचार्य श्री के दर्शन हेतु दिनांक 24.7.82 को पधारे आपकें भावों की निर्मलता को धन्य है, समाधीसागर जी को समाधि में तल्लीन देखकर आपके भाव समाधी लेने के हो गये। आपने आचार्य भगवन् के समक्ष दिनांक 29.7.82 को क्षेत्रनियास परिग्रह का त्याग नैनागिर क्षेत्र से जीवन पर्यन्त कही–नही जायेगे, जिस दिन समाधीसागर जी की समाधी हुई 14 अगस्त को आपने आचार्य श्री से अन्य का त्याग 10 मी. प्रतिमा के व्रत लिए आचार्यश्री द्वारा समतासागर नाम प्राप्त हुआ। जैसा नाम प्राप्त हुआ वैसा ही काम एवं साहस रहा। 14 अगस्त से 13 सितम्बर तक आप छाछ एवं जल मट्ठा लेते रहे। 16 अक्टूबर को सभी प्रकार के अहारों का त्याग आचार्यश्री के समक्ष किया, आचार्यश्री द्वारा मुनि दीक्षा प्राप्त की नाम

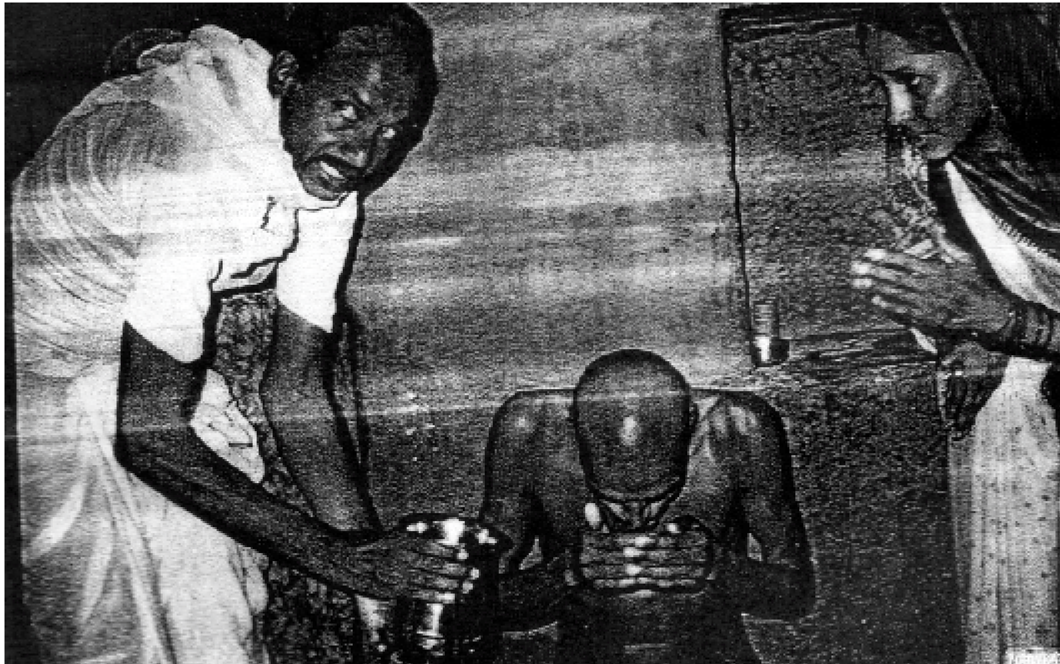

मुनीश्री छमासागर जी महाराज की दीक्षा के बाद प्रथम अहार देने का सौभाग्य श्रीमति चन्दा-कन्छेदीलाल मैनेंजर नैनाबिर वालों को प्राप्त हुआ दिनांक 21.8.82 दिन शनिवार

मुनिश्री समतासागर जी रहा। 18.10.82 दिन सोमवार द्वितीय आषाढ़ सुदी 2 शाम 4 बजे णमोकार मंत्र का जाप करते–करते आचार्य भगवन् के समक्ष समाधिस्थ हो गये विमान में विराजमान कर जुलूस के साथ अंतिम संस्कार 5:30 शाम घी, कपूर, नारियल, चन्दन लकड़ी आदि से किया गया। समाधी स्थल पुराने मंदिर के पीछे ही पर्वत पर बनाया गया।

तीसरी समाधी:–

श्रीमान ब्रा.बालचन्द जी महूना 2 प्रतिमाधारी उम्र 93 वर्ष, 29 सितम्बर 82 को पूज्य आचार्यश्री विद्यासागर जी महामुनिराज एवं सिद्धक्षेत्र नैनागिर जी की वन्दना हेतु पधारे। यहा श्री समतासागर जी महाराज की निर्विघ्न सल्लेखना समाधि और आचार्य श्री एवं संघ द्वारा की जा रही वैयावृति देखकर आपके भाव भी सल्लेखना समाधि लेने के हो गये। पूज्य आचार्य श्री से विनम्र निवेदन के साथ तत्काल सल्लेखनाव्रत प्रदान करने का निवेदन किया मात्र दो ही दिन में आचार्य श्री ने उनकी भावना को परखकर 1 अक्टूबर 82 को क्षेत्रन्यांस एवं 10वीं प्रतिमा के व्रत प्रदान किये नाम दिया। स्वभावसागर श्री स्वभावसागर जी ने तत्काल मृत्यु पर्यत अन्य अहार त्याग दिया निज स्वाभाव में रहते हुए सदैव प्रशन्नचित रहते थे और प्रत्येक दर्शनार्थी को हंसते हुए आशीर्वाद प्रदान करते थे। अच्छे रहो भैया, अच्छे रहो भैया ये शब्द सदा आपके मुख से निकलकर दर्शनार्थी को आश्चर्यचकित कर देते थे। 2 नबम्वर 82 को आपने छाछ एवं जल भी त्याग कर वस्त्र भी त्याग कर दिये, मुनि नियमसागर जी सदैव आपकी वैयावृत्ति हेतु आपके आसन के निकट उपस्थित रहते थे। मध्य रात्रि में श्री स्वभावसागर जी ने मुनि नियमसागर जी से कहा कि महाराज सम्बोधो गाड़ी जाने वाली है मुनि नियमसागर जी ने आचार्य श्री के पास सूचना भेजी। आचार्यश्री आये ओर णमोकार मंत्र का बाचन प्रारंभ हुआ। 12:35 बजे अच्छे

आचार्य भगवन विद्यासागर जी महाराज के तखज के नीचे कुत्ता आकर बैठ जाया करता था।

रहो भैया कहकर स्वभाव सागर चिरनिद्रा में लीन हो गये, दाह संस्कार 3 नवम्बर को प्रात: गाजे–बाजे के साथ घृत, नारियल, चन्दन, कपूर, लकड़ी के साथ सम्पन्न हुआ, समाधी पर्वत पर पुराने मंदिर के पीछे बनाई गई।

चौथी समाधी :–

श्री 105 ऐलक सुमतिसागर जी महाराज आप गृहस्थ अवस्था में तारादेही जिला दमोह के रहने वाले थे, आपका चार्तुमास मडिया जी जबलपुर में चल रहा था। नैनागिर जी पर चल रही समाधी की जानकारी मिलने से आपके भाव सल्लेखना समाधी लेने के हुए, 19 सितम्बर 1982 दिन रविवार को कुछ श्रावकगण आपको जीप से लेकर आये, आचार्य श्री से संल्लेखना प्रारम्भ हुई 10 नवम्बर तक छाछ एवं जल लेते रहे, 11 नबम्वर का सभी प्रकार के अहारों का त्याग कर दिया 15 नवम्बर 1982 कार्तिक कृष्ण अमावस्या भगवान महावीर निर्वाण दिवस की पावन बेला में आचार्य संघ की उपस्थिति में णमोकार मंत्र चल रहा था, सुमतिसागर जी अपने हाथ में जापमाला लिए जाप करते करते ठीक 8 बजे सुबह समाधीमरण हुआ। गाजे–बाजे के साथ विमान में विराजमान कर जुलूस के साथ पहाड़ी पर पुराने मंदिर के पीछे अंतिम संस्कार किया श्रीफल, चन्दन, कपूर–घी, लकड़ी से।

कुत्ता द्वारा समाधि ग्रहण :–

एक कुत्ता का नाम शेरा था करीब 12 वर्ष से क्षेत्र पर रहता था, यात्री आते तो बस या कार की आवाज सुनकर रोड तक जाना बस या कार के आगे–आगे आना आचार्यश्री के चर्तुमास एवं शीतयोग के समय साथ–साथ रहना प्रवचन के समय तखत के नीचे बैठ जाना प्रवचन के समय पर प्रवचन हाल में पहुँच जाना भगाने पर भागता नही था। दिनांक 17.11.82 को मुह में कुछ दर्द हुआ

आचार्य भगवन विद्यासागर जी महाराज के तखत (पाटे) के नीचे आकर कुत्ता बैठ जाया करता था।

जल मंदिर के दरवाजे पर बैठा रहा, 18.11.82 को ब्रह्चारणी बहिन जलमंदिर गई तो कुत्ता की दशा देख बहिनों ने णमोकार मंत्र सुनाना प्रारंभ किया, बहिने पर्वत पर जाने लगी कुत्ता उठकर बहिनों के पीछे–पीछे चला गया कुत्ता की हालत देखकर सभी साधुगणों ने णमोकार मंत्र सुनाना प्रांरभ कर दिया, आचार्य भगवान ने कहा तिर्यच पशु भी संल्लेखना ले लेते है। कुत्ता ने सिर हिला कर स्वीकार किया, आचार्य श्री ने णमोकार मंत्र सुनाकार मरणपर्यन्त तक अन्न जल का त्याग कराया, कुत्ते ने सिर नवांकर स्वीकार किया फिर क्या था कुत्ता ब्राह्चारणी बहिनों के साथ नीचे आकर जल मंदिर के पास बरगद के पेड के पास जहाँ 1956 में आदिसागर जी ने मुनि दीक्षा ली थी, उसी स्थान पर बैठ गया। बहनों ने णमोकार मंत्र सुनाना प्रारंभ किया ठीक 12 बजे कुत्ता का मरण हो गया यह हे आचार्य श्री एवं सिद्धक्षेत्र का प्रभाव।

आचार्य महाराज ने धर्म सभा को संबोधते समय कहा धर्म के प्रतिपालन से श्वान, कुत्ता भी देव बन जाता है,जबकि पाप या अधर्म के कारण देव भी श्वान बन जाता है। अंग्रेजी में भी अक्षरों का विलोय करने से यही भाव फलित होता है (Dog)कुत्ता सतकार्य करने से (God) देव बन सकता है। रत्नकाण्ड श्रावकाचार 29 की गथा का पद्यानुवाद बताया।

धर्म भाववश श्वान स्वर्ग में देव बने वह सुखित बने।
पाप–भाववश देव श्वान हो, पशुगति आ दुखित घने।।
अत: धर्म के बिन जन जन को, अन्य कौन फिर सम्यद है।
धर्मशरण हो मम जीवन हो, अक्षय सुख का आस्पद है।।

इस चार्तुमास में संघस्थ साधुओ को अध्यापित कराये ग्रंथ :–

आचार्य भगवान द्वारा संघ के सभी साधु एवं ब्राह्मचारणी एवं ब्राह्मचारी भैया बहिनों को ज्ञानार्णव, सर्वार्थ सिद्धी का पठन पाठन कराया गया।

ऐलक अभयसागर जी (पर्वत पर) गिरीराज

आचार्यश्री द्वारा निम्न ग्रंन्थों का लेखन किया गया:–

जिनेन्द्र स्तुति आचार्य पाडा केशरी स्वामी द्वारा रचित पाक्ष केशरी स्त्रोडा संस्कृत के 50 पद्यों का जिनेन्द्र स्तुति के नाम से पाद्यानुवाद किया ज्ञानोदय छंद 50 पद्यों की कृति 24.7.82 को नैनागिर जी पर पूर्ण हुई।

बंगला कवितायें की रचना नैनागिर के प्रारंभ की

बंगाली कविता इस प्रकार है :–

1. उच्चारण	अर्थ
अर्थ ईआनर्थेर मूल	अर्थ है अनर्थ का मूल
ओर्थोर त्येग पोरमार्थेर चूड़ो के पावा,	अर्थ का त्याग ही परमार्थ शिखर को
सोज्जन पुरुषदेर, जोन्नो एईओर्थ सोर्वदा	पाना है सज्जनों के लिए वह अर्थ सदा
धूलोर मोनो व्र्यथो।	धूल के समान व्यर्थ है
2. ते मनि ई मोन	नदी का जीवन ही दो तट है वैसे ही
तोमार जीबोन जोदि गुरु चोरमन	मन तेरा जीवन भी गुरु चरणों की
संगाति तेई उन्नोति कोरे जाबे।	संगति से ही उन्नति की ओर जावेगा

इस चार्तुमास आजीवन ब्राह्मचारी व्रत लेने वाले महानुभाव :–

1. श्री सुरेशचन्द्र पिता भागचन्द्र जी ग्राम सेमरिया जिला नरसिंहपुर
शिक्षा वी.एस.सी. 4 जून 1982
2. श्री उत्तमचन्द्र जी पिता श्री सोनेलाल जी गढ़ा जबलपुर म.प्र.
शिक्षा (आठवीं) 28 जून 1982
3. श्री बाहुबली जी पिता हुकमचन्द्र सांघलिया पाटन जिला जबलपुर
शिक्षा एम.कॉम.29 अगस्त 1982

4. श्री सनत कुमार जी पिता बाबूलाल जी बन्डा जिला सागर, म.प्र.

2 नबम्वर 1982

5. श्री नेमकार जी, कर्नाटक

17 नबम्वर 1982

परिणामों की विचित्रता :–

श्री बाहुबली कुमार सीधे लिये एम.कॉम. आयु 22 वर्ष अपने माता पिता के साथ पर्वराज पर्यूषर्ण पर्व में पूज्य आचार्य भगवान के सानिध्य में धर्म लाभ लेने नैनागिर जी आये थे। पाटन में मेट्रिक उतीर्ण होने पर 5 वर्ष तक जबलपुर में जैन वोर्डिंग में रहकर बी.कॉम. एम.कॉम. की परीक्षा उत्तीर्ण की, इसलिए रात्रि भोजन त्याग का नियम नही था, पर्यूषणपर्व में भी होटल में चाय नाश्ता करने में एतराज नही था। भाद्रपद शुल्क 11 को रात्रि में अपनी माँ से कहा कुछ खाने को दो भूख लगी है, माँ ने कहा भैया व्रत चल रहे है सिद्धक्षेत्र पर है आचार्य का संघ है रात्रि में खाना ठीक नही हैं। कुछ धर्म भी सीखो बाहुबली बोले माता जी जब हम धर्म करेगे आप रोयगी माँ ने कहा तुम्हारे धर्म आचरण पर हम क्यो रोयगें भाद्रपद शुल्क 12 त्याग दिवस के दिन प्रात: उठ स्नान कर पर्वत पर आचार्य श्री के चरणों में पहुँचे मस्तक नवाकर आचार्य श्री से बोले महाराज मुझे आजीवन ब्राह्मचारी व्रत देकर संघ में शामिल करने की कृमा करे। आचार्यश्री ने कहा माता पिता की आज्ञा लेना तथा केशलोंच करना, बाहुबली ने कहा मातापिता की आज्ञा मिलना मुश्किल है कैशलोंच अभी करता हूँ, अनुमति मिलते ही कैशलोंच प्रारंभ कर दिया। माताराम रोते हुए आचार्यश्री के पास पहुँची रात्री की बात बार–बार याद आ रही थी (वर्तमान में 105 ऐलक अभयसागर जी ऐलक दीक्षा सम्मेदशिखर जी 10 फरवरी 1983)।

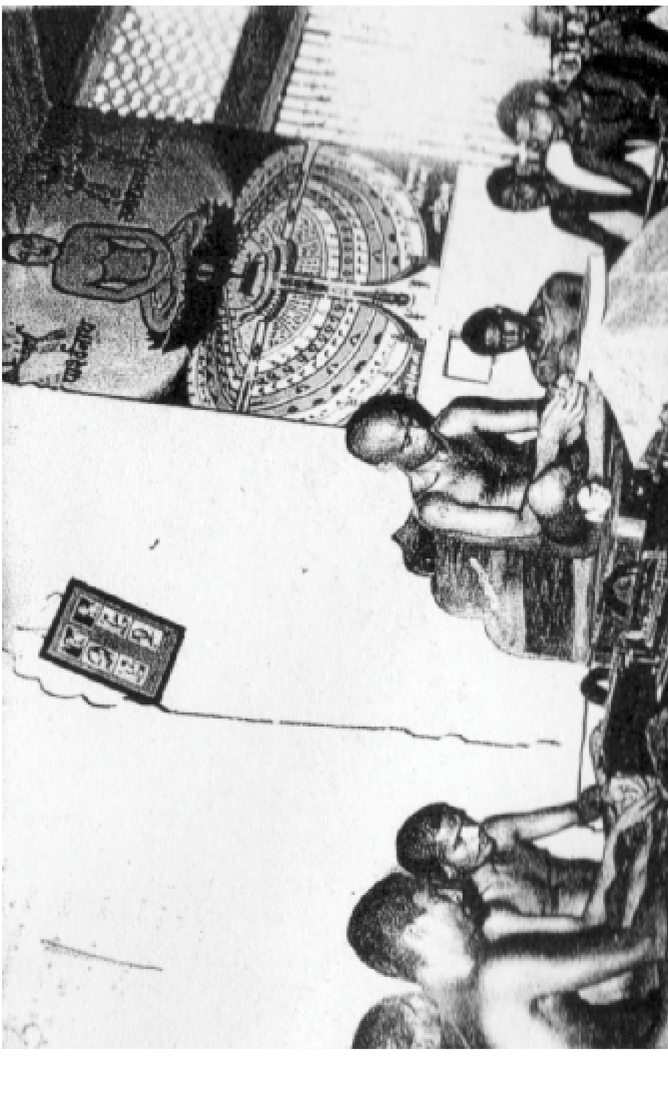

आचार्य भगवन प्रवचन हाल से प्रवचन करते हुऐ नीचे मंदिर जी

पिछिका पाने का सौभाग्य :–

चार्तुमास समापन के बाद आचार्य भगवन् विद्यासागर जी महामुनीराज की पिछ्छी पाने का महान अवसर ब्रा.कमला दीदी शाहगढ़ को प्राप्त हुआ वर्तमान में आर्यिका गुणमति माता जी है।

बंगला कवितायें की रचना प्रारंभ की बुन्देलखण्ड में स्थित 23वें तीर्थकर भगवान पारस नाथ के समवशरण स्थली नैनागिर में हुई दिनांक 2.12.1982 को सम्मेदशिखर जी बिहार किया लगभग 1000 कि.मी. यात्रा करते सम्मेदशिखर जी पहुँचे बिहार दलपतपुर होते हुआ।

बिहार समय निम्न साधुगण थे :–

1. आचार्यश्री विद्यासागर जी, 2. मुनिश्री समयसागर जी, 3. मुनिश्री योगसागर जी, 4. मुनिश्री नियमसागर जी, 5. मुनिश्री ओमसागर जी, 6. मुनिश्री चेतनसागर जी, 7. मुनिश्री क्षमासागर जी, 8. मुनिश्री गुप्तिसागर जी, 9. मुनिश्री संयमसागर जी, 10. छुल्लक श्री भावसागर जी, 11. छुल्लक श्री सुबोधसागर जी, 12. परमसागर जी, 13. छुल्लक श्री सुगुप्तिसागर जी। इसके अलावा ब्राह्मचारीगण श्रावक श्राविका भी पैदल शिखर जी तक गये शिखर जी पहुँचकर 7 वन्दना की 7 ब्राह्मचारीयों को ऐलक दीक्षा दी 10.2.1983 के दिन बिहार ईशरी के लिए दिनांक 16.2.1983 को हुआ। ईशरी के ब्रा.जिनेन्द्र वर्णी ने आपसे छुल्लक दीक्षा ली नाम सिद्धांत सागर जी के रूप में समाधिमरण को प्राप्त किया 1983 का चार्तमास ईशरी पर हुआ।

काल का अनवरत चक्र चलते हुए नैनागिर जी आ पहुँचा विद्या के सागर में समय पर योग के द्वारा नियम से ओम द्वारा चेतन से गुप्ति में लीन संयम द्वारा समाधी में लीन समता से स्वाभाव द्वारा सुमति पाकर सभी एक साथ बिदा हुआ, यह चक्र चलते–चलते सम्मेदशिखर जी पहुँचा।

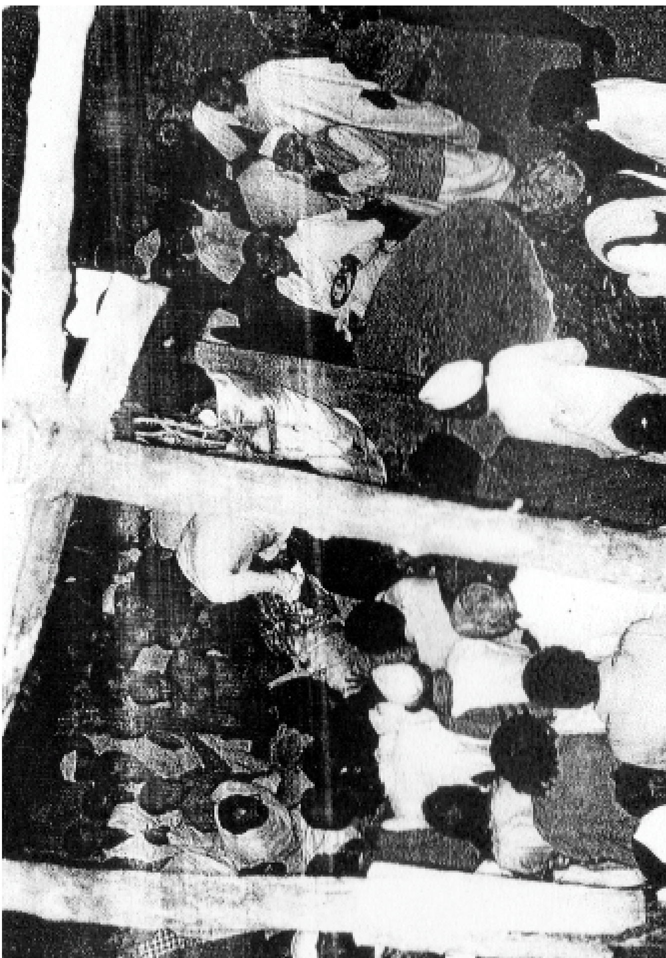

समोसरण मंदिर जी की गंध कुटी में चारो मूर्ति चढ़ाते समय

आचार्य भगवान विद्यासागर जी संसंघ का छठवीं बार आगमन :–

अहारजी का चार्तुमास समापन के बाद दलपतपुर होते हुए दिनांक 18.12.1985 को शाम 5 बजे नैनागिर जी प्रवेश किया।

संघ में निम्न साधुगण थे :–

1. आचार्य भगवन् विद्यासागर जी, 2. मुनिश्री समयसागर जी, 3. मुनिश्री योगसागर जी, 4. मुनिश्री ओमसागर जी, 5. मुनिश्री छमासागर जी, 6. मुनिश्री गुप्तिसागर जी, 7. मुनिश्री सुधासागर जी, 8. मुनिश्री समतासागरजी, 9. मुनिश्री स्वाभावसागर जी, 10. मुनिश्री समाधीसागर जी, 11. ऐलक श्री निशंकसागर जी, 12. ऐलक श्री करूणासागर जी, 13.ऐलक श्री दयासागर जी, 14. ऐलक श्री अभयसागर जी, 15. छुल्लक श्री प्रमाणसागर जी, 16. छुल्लक श्री प्रसमसागर जी, 17. छुल्लक श्री ध्यानसागर जी, 18. छुल्लक श्री सम्यक सागर जी, 19. छुल्लक श्री संवेग सागर जी, 20. छुल्लक श्री मंगलसागर जी, 21. छुल्लक श्री वास्लयसागर जी, 22. छुल्लक श्री आर्जवसागर जी, 23. छुल्लक श्री मार्दवसागर जी, 24. छुल्लक श्री सौम्यसागर जी।

दीक्षा छेदन :–

मुनिश्री ओमसागर जी निमत्यज्ञान का उपयोगर कर श्रावकों को उनके भविष्य आदि बताया करते है, मुनि का यह काम नहीं है, न मानने के कारण 29.12.1985 को दीक्षा छेदन कर दी।

इस सीतयोग में संघस्थ साधुओं को अध्यापित कराये ग्रंथ :–

आचार्य भगवन् द्वारा संघ के सभी साधु एव ब्रह्मचारीगण तथा भैया बहिनों को तन्वरूपमाला, मूलाचार (पूर्वार्ध) का बाचन कराया गया।

आचार्य भगवन् के सानिध्य में समोसरण मंदिर की चारों मूर्ति ऊपर गंद्य

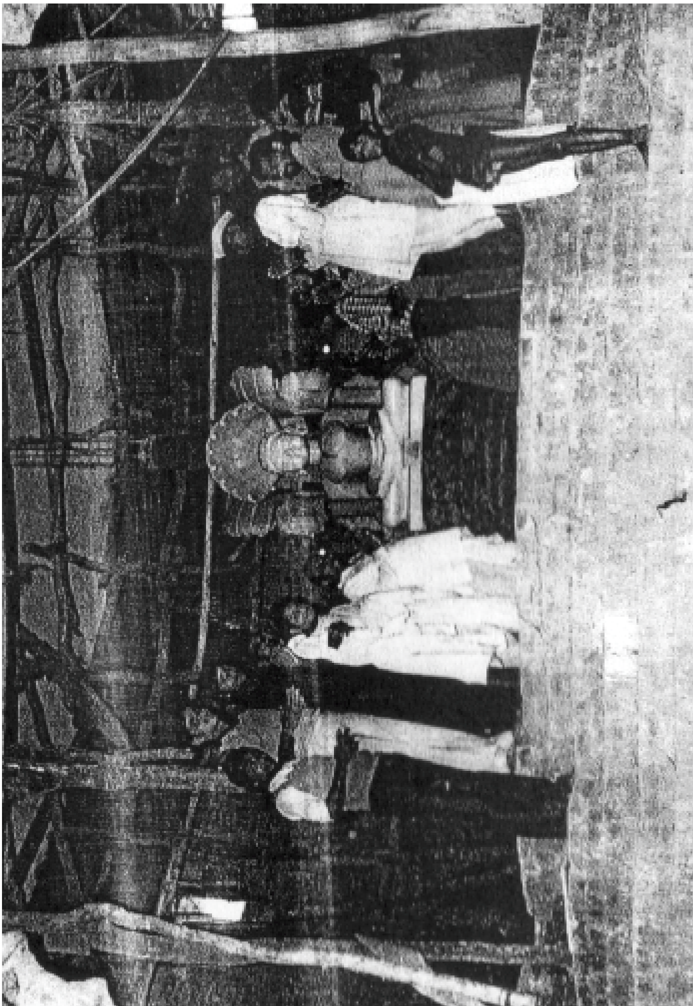

समवसरण मंदिर में चारों मूर्ति विराजमान हुई 1.1.86 को आचार्यश्री के समक्ष में

कुटी में कैसे पहुँचेगी, मगर आचार्य श्री की आशीर्वाद से हाथों हाथ ही चारों मूर्ति गंद्यकुटी में विराजमान हो गई।

आचार्य श्री द्वारा मूकमाटी काव्य रचना चलती रही–

आचार्य भगवन् द्वारा रचित मूकमाटी ग्रंथ की काव्य रचना पूरे सीतयोग समय चलती रही।

कलयुग हो या सतयुग निम्न पंक्तियों में दर्शाया गया

सतयुग हो या कलयुग
बाहरी नहीं
भीतरी घटना है वह
सत्य की खोज में लगी दृष्टि हो
सत युग है बेटा
और
असतविषयों में डूबी
आ–पाद–काण्ड
सत को असत मानने वाली दृष्टि
स्वयं कलियुग है बेटा।

अपने धन संग्रह की अपेक्षा धन वितरण/उपयोग को सार्थक माना है :–

अब धन–संग्रह नही
जन–संग्रह करो
और
लोभ के वशीभूत हो
अंधाधुंध संकलित का
समुचित वितरण करो

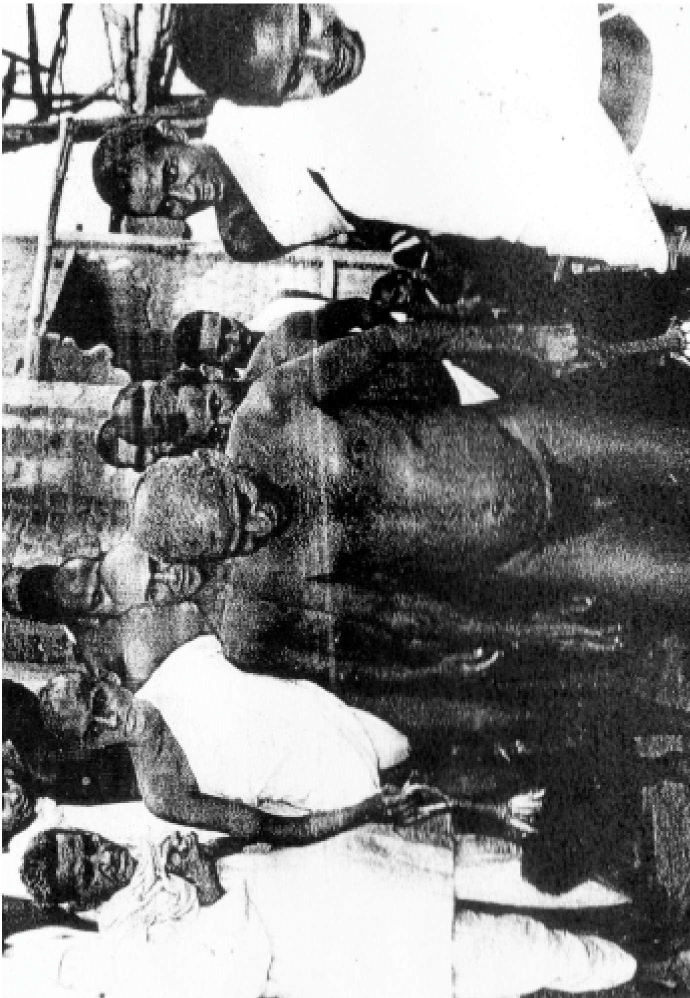

आचार्य भगवन संघ सहित समवसरण मंदिर जी की मूर्ति विराजमान के समय दिनांक 1.1.1986

अन्यथा
धनहीनों में
चोरी के भाव जागते है, जागे है
चोरी मतकर, चोरी मत करो
यह कहना केवल
धर्म का नाटक है
उपारित सभ्यता–उपचार।

शीतयोग समापन के बाद दिनांक 9.2.86 को दलपतपुर होकर केसली (सागर) पंचकल्याणक में पहुँचे दिनांक 7 से 11 मार्च 1986 में कराया प्रतिष्ठाचार्य पं.श्री अभिनंदन शास्त्री रवनियाधाना शिवपुरी वाले थे। वहा से पपोरा जी चार्तुमास हेतु पहुँचे।

आचार्य भगवन् विद्यासागर जी ससंघ का सातवीं बार आगमनः–

गुरुवर आचार्य भगवन् पपौरा जी का चार्तुमास समापन करके दलपतपुर होते हुए दिनांक 28.11.1986 को शाम 4.30 बजे नैनागिर जी में प्रवेश किया, सीतयोग एवं पंचकल्याणक हेतु संघ में निम्न साधुगण आये–

1. आचार्यश्री विद्यासागर जी, 2. मुनिश्री समयसागर जी, 3. मुनिश्री योगसागर जी, 4. मुनिश्री छमासागर जी, 5. मुनिश्री गुप्तिसागर जी, 6. मुनिश्री सुधासागर जी, 7. मुनिश्री समतासागर जी, 8. मुनिश्री स्वभावसागर जी, 9. मुनिश्री समाधीसागर जी, 10. ऐलक श्री निशंकसागर जी, 11. ऐलक श्री करूणसागर जी, 12. ऐलक श्री प्रणंमसागर जी, 13. ऐलकश्री अभयसागर जी, 14. छुल्लक श्री प्रमाणसागर जी, 15. छुल्लक श्री प्रसमसागर जी, 16. छुल्लक श्री ध्यानसागर जी, 17. छुल्लक श्री सम्यकसागर जी, 18. छुल्लक श्री संवेगसागर जी, 19. छुल्लक श्री मंगलसागर जी, 20. छुल्लक श्री वात्सलयसागर जी, 21. छुल्लक श्री

समवसरण मंदिर जी के विराजमान प्रतिमा

आर्जवसागर जी, 22. छुल्लक श्री मार्दवसागर जी, 23. छुल्लक श्री सोम्यसागर जी।

इस शीतयोग में संघस्थ साधुओं को अध्यापित कराये ग्रंथः—

आचार्य श्री द्वारा संघस्थ साधुओं एवं ब्रह्मचारणी, ब्रह्मचारी भैया सभी को मूलाचार (उत्तरार्ध) अध्यापित कराया गया।

आचार्य भगवन् के संघ सानिध्य में पंचकल्याणक में विशाल जन कुम्भः—

नैनागिर एक ऐसी पुण्य धरा है जहाँ देव, विज्ञानी कृषि मुनियों ने विचरण किया था, आज से 29 सौ साल पूर्व भगवान पारसनाथ स्वामी का समोवशरण आया था, कैसा रहा होगा यह गिरी नगर किस तरह उमड़ पडे होगे, लोग बारह कोठे रहे होगे, सवायोजन परिधि पाँच सौ धनुष की ऊचाई पर कुबेर द्वारा रचा गया समोशरण यह रेशन्दीगिर विगत में वाराणसी से और अनागत में सम्मेदशिखर से यानी भगवान पार्श्वनाथ की जन्म भूमि निर्वाण भूमि के बीच की एक उल्लेखनी कड़ी एक अध्यात्मिक सेतु जहां की वन्दना करने पर वाराणसी एवं सम्मेदशिखर की वन्दना अपने आप हो जाती है।

भगवान पारसनाथ के समवशरण जीवंत रूप देने के लिए पहाड़ी की तलहटी में स्थित तलाब के दक्षिण तट पर 1 नबम्वर 1981 को आचार्य श्री के चार्तुमास पर शुभांरम्मय हुआ था हमारी जानकारी के अनुसार यह समोशरण देश में सबसे बड़ा एवं मनोग्य है इस मंदिर की ऊचाई 51 फीट मंदिर के नीचे का हिस्सा 11 फीट तलाब में है, 100 फीट लम्बाई 100 फीट चौड़ाई का चबूतरा बनाया गया इसके ऊपर 70×70 फुट में मंदिर निर्माण किया, 40×40 फुट में गन्ध फुटी

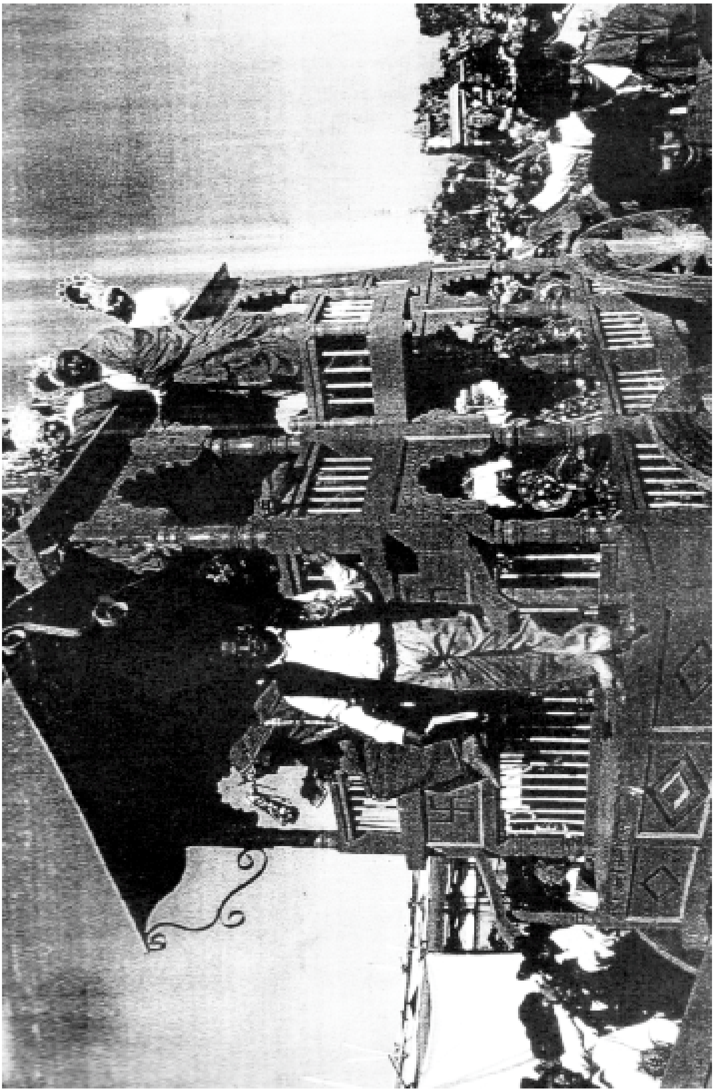

गजरथ परिक्रमा तीन गजरथों के साथ आगे में स्वयं खड़ा हूँ

बनाई तल से 21 फुट ऊँचाई पर कमल निर्मित सिद्यासन कल्पवृक्ष के नीचे पारसनाथ भगवान की प्रतिमा नाखूनी रंग सहित पद्मासन 5 फुट ऊँचाई की चार प्रतिमा विराजमान की गई। मुख्यता इन प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा के लिए 7 फरवरी से 12 फरवरी 1987 में पंचकल्याणक का आयोजन तीन गजरथों सहित किया गया। 185 अन्य मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा हुई, श्री जी को विशाल रथों में विराजमान कर तीन रथ चलाये गये थे हाथीओं द्वारा खीचे गये, इन रथों के पायलट का कार्य एक हस्थीवान को सोपा गया जो बहुत समय से क्षेत्र पर मंत्री पद पर कार्य कर रहे थे एवं गजरथ पंचकल्याणक के महामंत्री सेठ शिखरचन्द्र जी बन्डा कार्य अध्यक्ष चौधरी प्रेमचन्द्र जी बन्डा ट्रस्ट एवं पंचकल्याणक के अध्यक्ष महेन्द्र कुमार जी मलैया सागर के मार्ग दर्शन में अपनी ट्रस्ट एवं प्रबंधकारणी के सभी पदाधिकारी एवं आस-पास के गौरवशाली समाज के सहयोग के साथ पूज्य गुरुवर विद्यासागर जी महामुनिराज के आशीर्वाद से सम्पन्न कराया।

मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा के लिए 50 फुट चौड़ी 75 फुट लम्बाई में वेदिका बनाई वेदिका के सामने 150 फुट चौड़ा 325 फुट लम्बाई में पान्डाल का निर्माण किया।

क्षेत्र पर मात्र 5 धर्मशाला एवं 3 हॉल थे धर्मशाला में कुल 80 कमरे थे पंचकल्याणक की व्यवस्था हेतु 10 नगर अलग से बसाए गये। 1500 सौ टेन्ट एवं 50 विशाल सामपाने 30×30 के लगाये गये ऐसी व्यवस्था कम पड़ गई लोग बाहर भी रुके रहे।

जल व्यवस्था का अतिशय :-

2 कि.मी. दूर स्थित बेबस नदी से राज्यशासन के माध्यम से 15-20 टेंकरो द्वारा की गई इस व्यवस्था के लिए निजी टेंकर भी दिये गये व्यक्तियों

जल मंदिर तलहटी के मंदिर एवं धर्मशाला

द्वारा आचार्य श्री के पास कमेटी के अध्यक्ष मंत्री ने जाकर निवेदन किया की महाराज पानी की बड़ी समस्या है कुछ लोगो ने कहा पाण्डाल के समीप ही एक नाला है उस नाले में छोटा सा कुण्ड है(जिसे बेल घाट कहते है) 5 फरवरी को वैज्ञानिक आधार पर तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा यह अनुमान किया गया कि इस कुण्ड में मात्र 10–15 टेंकर पानी ही प्राप्त हो सकता है किन्तु वैज्ञानिक तथ्यों के विपरीत आश्चर्यजनक चमत्कार हुआ कुण्ड से प्रतिदिन सेकडौ टेंकर पानी प्राप्त होता रहा एवं नाला भी भर गया।7 दिन तक कुण्ड के जल का स्तर बिल्कुल भी नही घटा, रथ की फेरी 12 फरवरी को लगने बाद पानी आना बन्द हो गया फेरी के बाद आचार्य जी के प्रववन के पूर्व प्रतिठाचार्य पं.गुलाबचन्द्र जी पुष्प ने कहा पानी की इस घटना का कोई ठोस या समुचित कारण बताना संभव प्रतीत नही होता। यह तो आचार्य श्री के आशीर्वाद का परिणाम है, ताली तो बज गई इस के बाद आचार्य श्री ने प्रवचन में कहा यह आशीर्वाद का फल नहीं है ऐसे धार्मिक अनुष्ठान जब हुआ करते है जब एक इन्द्री से लेकर सभी जीवों का पुण्य का उदय होता है तो सभी व्यवस्था अपने आप हो जाती है।

इस अवसर पर भोजनालय में प्रतिदिन लगभग 2 हजार व्यक्तियों द्वारा भोजन किया गया किन्तु यह विस्मयपूर्ण है की भोजन सामग्री का व्यय औसतन दृष्टि से बहुत कम हुआ इस जैन कुम्भ में कोई व्यक्ति बीमार नही हुआ किसी प्रकार की कोई अप्रिय घटना दुर्घटना नही हुई। किसी प्रकार के छोटे मोटे अपराध भी नही हुए जबकि यह क्षेत्र वर्षो से डाकू ग्रस्त रहा है।

इस आयोजन में आस–पास के सभी ग्रामों से 300 व्यक्ति सदस्य के रूप में बनाये गये। एक एक हजार की धनराशि लेकर इन सभी को इसी राशी में आवास व्यवस्था नि:शुल्क दी गई थी। इस प्रकार 3 लाख की राशि प्राप्त हुई बोलियों से 3 लाख फुटकर राशि 1 लाख कुल आय 7 लाख खर्चा 6 लाख के लगभग हुआ।

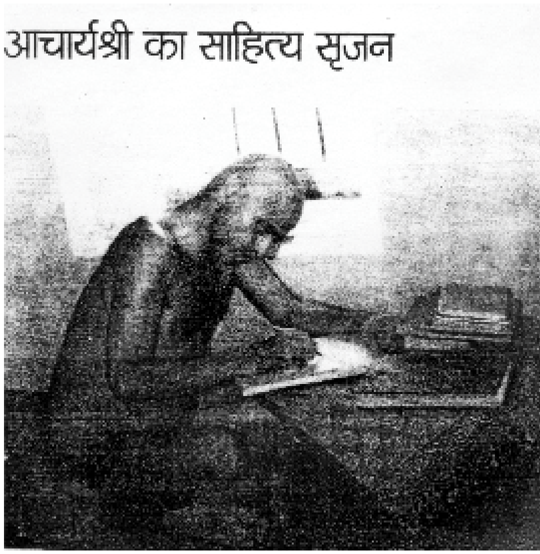

मूकमाटी महाकाव्य लिखते हुए आचार्यश्री

आचार्यश्री के पाटा के नीचे कुत्ता का बैठना

23वे तीर्थंकर की समवशरण भूमि
23वे तीर्थंकर का पंचकल्याणक
23 पिच्छीधारी साधुगण आचार्य संघ में
23 श्रावक श्राविका को दीक्षा दी आचार्य श्री जी ने

आचार्यश्री द्वारा मूकमाटी काव्य रचना चलती रही:—

आचार्यश्री द्वारा मूकमाटी महाकाव्य की रचना दोनों शीतयोग में चलती रही, इस महाकाव्य कृति का समापन पंचकल्याणक के समय ज्ञानकल्याणक दिवस माघ शुल्क त्रियोदशी बी.स. 2513, विक्रम संवत् 2043 दिन बुधवार दिनांक 11 फरवरी 1987 को पूर्ण हुआ।

एकान्त और अनेकान्त विचारधारा का दृष्टांट सहित सम्यक दर्शन निम्न पंक्तियों में अवलोकनीय है:—

अब दर्शक का दर्शन होता है
कुम्भ के मुख मण्डल पर
ही और भी इन दो अक्षरो का
ये दोनो दर्शन का प्रतिनिधित्व करते है
ही एकान्तवाद का समर्थक है
भी अनेकान्त स्यादवाद का प्रतीक है
हम ही सब कुछ है
यूँ कहता है ही सदा
तुम सा तुच्छ कुछ नही हो
और
भी का कहना है कि

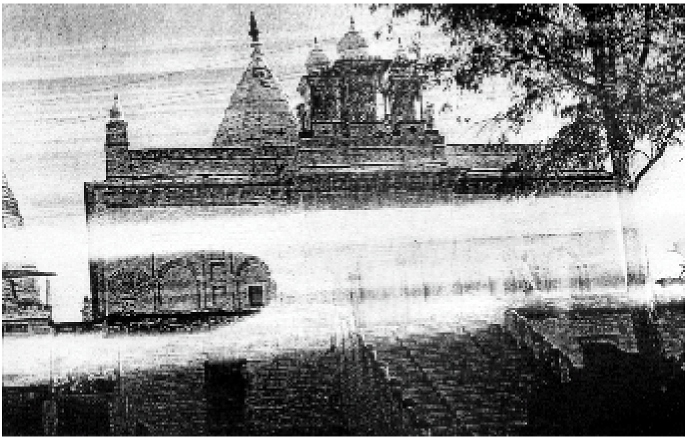

चौबीसी जिनालय

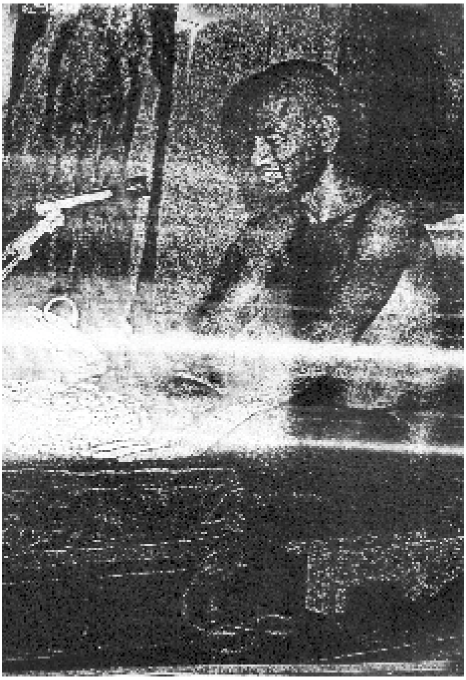

प्रवचन समय आचार्यश्री

हम भी है
तुम भी हो
सब कुछ
ही देखता है हीन दृष्टि से पर को
भी देखता है समीचीन दृष्टि से सब को
ही वस्तु की शक्ल को ही पकडता है
भी वस्तु के भीतरी भाग को भी छूता है
ही पश्चिमी सभ्यता है
भी है भारतीय संस्कृति भाग्य विधाता
रावण था ही का उपासक
राम के भीतर भी बैठा था
यही कारण कि
राम उपास्य हुये है रहेगें आगे भी
भी के आस-पास
बढ़ती सी भीड लगती आवश्य
किन्ती भीड़ नही
भी लोक तंत्र की रीड़ है
लोक मे लोक तन्डा का नीड़
तब तक सुरक्षित रहेगा
जब तक भी श्वास लेता रहेगा
भी से स्वच्छन्दा-मदान्यता मिटती है
स्वतत्रंता के स्वपन साकार होते है
सदविचार सदाचार के बीज
भी में है ही में नहीं

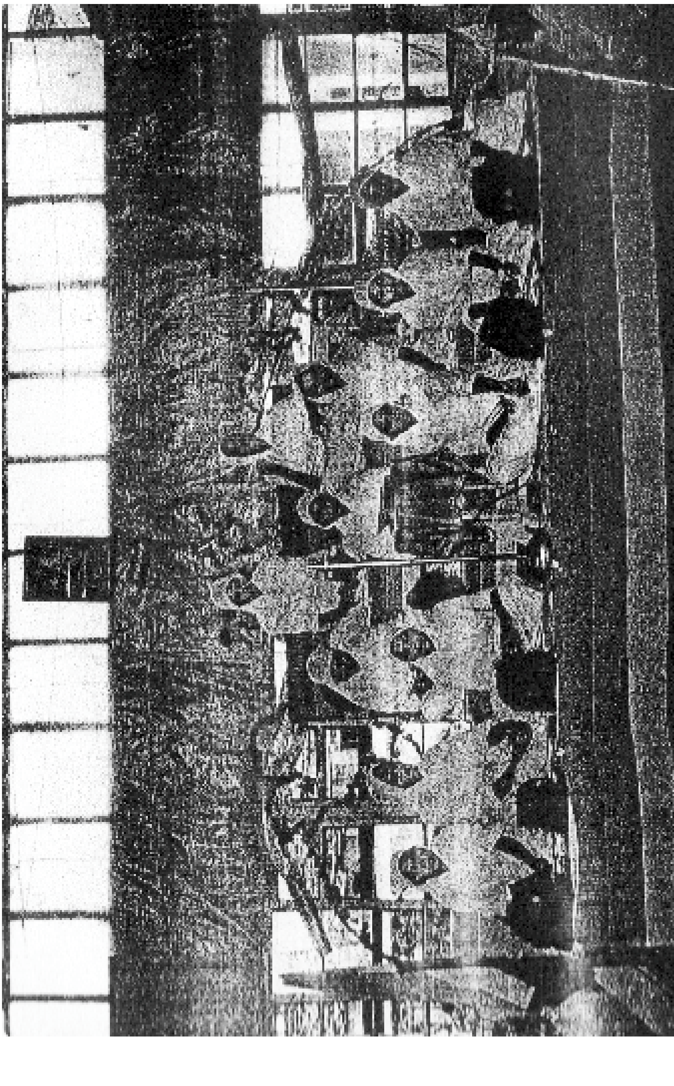

सभी आर्यिका माता जी

प्रभु से प्रार्थना है कि
ही से हीन हो जगत यह
अभी हो या कभी भी हो
भी से भेंट सभी की हो

आर्यिका दीक्षा :–

दिनांक 10.2.1987 गजरथ पंचकल्याणक समय दीक्षाकल्याणक के दिन 23 दीक्षा हुई, 11 माता जी एवं 12 छुल्लक।

1.	ब्रह्मचारिणी सुमन जी बन्डा	आर्यिका श्री गुरुमति माता जी
2.	ब्र. सुनीता सागर	आर्यिका श्री द्रढ़मति माता जी
3.	ब्र. कुसम रहली	आर्यिका श्री मृदुमति माता जी
4.	ब्र. ज्योति सागर	आर्यिका श्री ऋिजुमति माता जी
5.	ब्र. किरण जबलपुर	आर्यिका श्री तपोमति माता जी
6.	ब्र. कमलेश हिनोती	आर्यिका श्री सत्यमति माता जी
7.	ब्र. कमला शाहगढ़	आर्यिका श्री गुणमति माता जी
8.	ब्र. मीना, गीतामाला शाहगढ़	आर्यिका श्री जिनमति माता जी
9.	ब्र. ऊषा महराजपुर	आर्यिका श्री निर्णयमति माता जी
10.	शारदा दुर्ग	आर्यिका श्री उज्जलमति माता जी
11.	लक्ष्मीबाई	आर्यिका श्री पावनमति माता जी

छुल्लक दीक्षा :–

1.	ब्रह्मचारी शैलेश कुमार जबलपुर	छुल्लक प्रसन्नसागर जी
2.	ब्र. कमलेश जबलपुर	छुल्लक पवित्रसागर जी
3.	ब्र. ऋषभ कुमार जैसीनगर	छुल्लक निश्चयसागर जी
4.	ब्र. जितेन्द्र कुमार बडागॉव	छुल्लक नयसागर जी

समतासागर ब्राह्मचारी अवस्था में वैयावृत्ति करते हुए पहाडी पर

5.	ब्र. छतरपुर	छुल्लक विनयसागर जी
6.	ब्र. राकेश कुमार जबलपुर	छुल्लक गम्भीरसागर जी
7.	ब्र. संजय कुमार जबलपुर	छुल्लक धैर्यसागर जी
8.	ब्र. मुकेश कुमार वासांतारखेड़ा	छुल्लक उदारसागर जी
9.	ब्र. श्रीपाल (दक्षिण)	छुल्लक उत्तमसागर जी
10.	ब्र. देवेन्द्र दमोह	छुल्लक निसर्गसागर जी
11.	ब्र. चन्द्रकुमार जबलपुर	छुल्लक चन्द्रसागर जी
12.	ब्र. अभय कुमार घवोली बन्डा	छुल्लक निर्भय सागर जी

आचार्य भगवन विद्यासागर जी नैनागिर पर द्वितीयबार चरण पड़े तो बहुत बड़ा इतिहास बन गया।

1. ब्रह्मचारणी बहनो की संख्या नैनागिर जी से बड़ी।
2. ब्रह्मचारी भैयो की संख्या यही से बडी।
3. ऐलक छुल्लक दीक्षा प्रारंभ हुई।
4. बुन्देलखण्ड में प्रवेश के बाद प्रथम समाधी छुल्लक चन्द्रसागर जी की नैनागिर जी पर हुई।
5. शिकारी का मन पलटा शिकार का त्याग खेतसिंह ने किया।
6. आचार्य चरणों में डाकू दल हरीसिंह।
7. नाग नागनी का प्रवचन समय पर आना।
8. मुनि दीक्षा आचार्य जी द्वारा।
9. अंहिसा का प्रभाव।
10. तपस्या की परीक्षा आचार्य श्री को बुखार रहा 3 डिग्री तक।
11. परिणामों की विचित्रता बाहुबली पाटन वाले।
12. 1981 का चार्तुमास समोशरण का प्रतीक बना।

13. 1982 का चार्तुमास समाधी चार्तुमास रहा पाँच समाधी हुई।

14. त्रिर्यन्च पशु कुत्ता ने अपना अंतिम मरण सुधारा।

15. सम्मेदशिखर की यात्रा नैनागिर से प्रारंभ हुई।

16. चर्तुविध संघ बनने का श्रेय प्रथम आर्यिका दीक्षा यही से।

17. जंगल में मंगल का अनुभव।

18. एतिहासिक पंचकल्याणक का श्रेय इस भूमि को मिला तेईसवे तीर्थकर का पंचकल्याणक आचार्य संघ में 23 पिच्छी की नवीन 23 दीक्षित हुई।

19. अष्ट पाहुंड़ का लेखन।

20. जिनेन्द्र स्तुति का लेखन।

21. बंगला कविताएँ की रचना।

22. मूकमाटी महाकाव्य की पूर्णता।

23. पंचकल्याणक जलपूर्ती का अतिशय मात्र 7 दिन रहा।

नोट 23 तो मुख्य विशेषातायें यहां पर हुई परन्तु अनेकों प्रकार की घटना यहां पर होती रही, सात से आठ के दसक में अर्थात् 1977 से 1987 के बीच आचार्यश्री 7 बार यहा पर पधारे।

संकलनकर्ता प्रत्यक्षदर्शी
कन्छेदीलाल जैन मैनेजर
श्री दि.जैन सिद्धक्षेत्र नैनागिर
जिला छतरपुर(म.प्र.)
1973 से कार्यरत
15 अगस्त 1990 में 3000 प्रति
प्रकाशित हुई